।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 131 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अप्रेल – 2019 30/–प्रति

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति...

भारतीय योग वेद रूपी कल्पतरू का अमर फल है।
हे सत्पुरुषों! इसका सेवन करो।

www.the-comforter.org

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 131 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका **अप्रेल – 2019**

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

❖
संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

❖
सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

मनुष्य जन्म से पूर्ण है....................4
भागवत पूर्णता का साधक ही पूर्णयोगी है (सम्पादकीय)....................5
सद्गुरुदेव का प्रवचन....................6
योग के आधार....................7
How does spiritual consciousness spread?....................8–10
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति 11–15
अतिमानव....................16–17
भारतवर्ष के दो महामंत्र....................18
चित्र पृष्ठ....................19–22
सिद्धयोग....................23
सद्गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि (कहानी)....................24–25
मेरे गुरुदेव....................26
योगियों की आत्मकथा....................27
योग के बारे में....................28
आंतरिक शरीर का संरचनात्मक ज्ञान....................29
हृदय मंथन 30
मनुष्य और विकास....................31
सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन....................32
अवतार की संभावना और हेतु....................33
प्रार्थना....................34
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....................35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय....................36–37
ध्यान विधि....................38

www.the-comforter.org

मनुष्य जन्म से पूर्ण है

आप जन्म से पूर्ण हो। आपकी जानकारी में नहीं है। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा। मैं तो एक आराधना का तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत जान जाओगे, आप क्या हो? लेने देने के लिए किसी के पास कुछ भी नहीं है। बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ है, अंदर है, उसको चेतन करने का एक तरीका है। यह एक क्रियात्मक परिवर्तन है। गुरु एक तरीका बताता है, जिससे साधक आराधना करनी शुरू करता है तो उसमें परिवर्तन आना शुरू हो जाता है।

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

भागवत पूर्णता का साधक ही पूर्णयोगी है

("भागवत जीवन, शक्ति, प्रकाश और आनन्द में उठना और उस सांचे में सांसारिक जीवन को ढ़ालना धर्म की परम अभीप्सा और योग का पूर्ण व्यावहारिक लक्ष्य है। लक्ष्य है भगवान् को विश्व में चरितार्थ करना, लेकिन यह विश्व के परात्पर भगवान् को चरितार्थ किये बिना नहीं हो सकता।"

और यह कार्य समर्थ सद्गुरुदेव की शक्तिपात-दीक्षा से विश्व में चरितार्थ हो रहा है। साधक को केवल अपनी आराधना करके आत्मनिर्भर बनना है, ताकि वह किसी भी विपरीत शक्ति से अप्रत्याशित की ठोकर न खाएं।)

योग का संपूर्ण उद्देश्य क्या है? श्री अरविन्द ने इस संबंध में विस्तार से लिखा है। कि एक साधक को अपने आराधना काल में किस प्रकार की चाल चलन से चलना चाहिए।

"योग द्वारा हम मिथ्यात्व में से सत्य में, दुर्बलता से बल में, दुख-दर्द से आनंद में, दासता में से स्वाधीनता में, मृत्यु से अमरता में, अंधेरे से प्रकाश में, अस्तव्यस्तता से शुद्धि में, अपूर्णता से पूर्णता में, आत्मविभाजन से ऐक्य में और माया से भगवान् में उठ सकते हैं। योग के अन्य सभी उपयोग विशेष और आंशिक लाभ हैं, जो हमेशा अनुसरणीय नहीं होते। जो भगवान् की पूर्णता को पाने का लक्ष्य अपनाता है, वही पूर्णयोग है। भागवत पूर्णता का साधक ही पूर्णयोगी है।

हमारा लक्ष्य होना चाहिये, उस तरह पूर्ण होना जैसे भगवान् अपनी सता और आनंद में पूर्ण हैं। वैसा शुद्ध जैसे वे शुद्ध हैं, वैसा आनन्दमय जैसे वे आनन्दमय हैं और जब हम स्वयं पूर्णयोग में सिद्ध हो जायें तो समस्त मानवजाति को उसी भागवत पूर्णता में लाना। अगर हम अपने लक्ष्य के लिये अपर्याप्त हैं तो इसका कोई महत्त्व नहीं, जब तक कि हम अपने-आपको पूरी तरह इस प्रयास में लगाते हैं और उसमें सतत निवास करते हैं और भले मार्ग पर दो इंच ही आगे बढ़ें, फिर भी मानव जाति को जो अभी संघर्ष और धुंधलके में रहती हैं, उसमें से उस प्रकाशमय आनन्द में आने में सहायता मिलेगी, जिसमें भगवान् हमें ले जाना चाहते हैं। हमारी तात्कालिक सफलता चाहे जैसी हो, हमारा अडिग लक्ष्य होना चाहिये किसी रास्ते की सराय में या अपूर्ण चट्टी में लेट जाना, नहीं बल्कि पूरी यात्रा को तय करना।

वह समस्त योग जो हमें संसार से पूरी तरह बाहर ले जाता है, दिव्य तपस्या का उच्च, किन्तु संकीर्ण विशिष्टीकरण है। भगवान् अपनी पूर्णता में हर चीज का आलिंगन करते हैं, हमें भी सबका आलिंगन करना चाहिये।

भगवान् समस्त अभिव्यक्ति और समस्त ज्ञान के परे, अपनी परम सत्ता में निरपेक्ष परब्रह्म हैं। जगत् के साथ संबंध में वह हैं, जो समस्त वैश्व सत्ता-के परे हैं। जब कि यदि हम उसे देखते हुए या उसकी तरफ से मुंह मोड़ते हुए देखें तो वे वह हैं जो विश्व को धारण और उसका पोषण करते हैं। वे वह है, जो विश्व बनता है, वे ही विश्व और उसके अंदर सब कुछ हैं।

वे निरपेक्ष और परम व्यक्तित्व भी हैं, जो विश्व में, विश्व के रूप में लीला कर रहे हैं। विश्व में वे उसकी अंतरात्मा और उसके प्रभु दीखते हैं। विश्व के रूप में वे प्रभु की इच्छा की गति या प्रक्रिया मालूम होते हैं और गति के सभी आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ परिणाम हैं। ब्रह्म की सभी अवस्थाएँ, परात्पर, धारक, वैश्व और व्यष्टिगत, सभी भागवत व्यक्तित्व द्वारा अनुप्राणित और पोषित होती हैं। वे सत्ता भी हैं और सत् की अवस्था भी। **हम सत् की अवस्था को निर्गुण ब्रह्म कहते हैं और सत्ता को सगुण ब्रह्म।**

हमारी चेतना के खेल के सिवाय उनमें कोई भेद नहीं है क्योंकि हर निर्गुण अवस्था किसी अभिव्यक्त या गुप्त व्यक्ति पर निर्भर होती है और उस व्यक्तित्व को प्रकट कर सकती है, जिसे वह धारण करती और पर्दे में रखती है और हर व्यक्तित्व अपने साथ एक निर्गुण सत्ता रखाता है और उसमें डुबकी लगा सकता है। वे यह इसलिये कर सकते हैं क्योंकि वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक रूप एक निरपेक्ष सत्ता में आत्मचेतना की भिन्न-भिन्न

शेष पृष्ठ 36,37 पर.....

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

तीन बंध-इस प्रकार आप ध्यान करोगे, नाम जप करोगे तो पहला बन्ध मूलाधार में लग जाएगा। अब अपान वायु नीचे नहीं जा सकेगा तो ऊपर उठना शुरू हो जाएगा। खास तौर से रीढ़ की हड्डी की कसरत करवाई जाती है, क्योंकि सुषुम्ना के अन्दर से उसको जाना है और यहाँ (सहस्रार) से सुषुम्ना जुड़ी हुई है।

सुषुम्ना में एक रोम भी ऐसा नहीं है, जो उससे जुड़ा हुआ नहीं हो। सुषुम्ना से एक रोम को आप खिंचोगे, दर्द होता है, दर्द यहाँ (मस्तिष्क में) होता है, और कहीं नहीं होता। डॉक्टर रीढ़ की हड्डी में इंजेक्शन लगा देते हैं, नीचे का पोर्सन काट दो, दर्द नहीं होता है, क्योंकि यहाँ (मस्तिष्क) से डिसकनेक्ट हो गया तो इस प्रकार रीढ़ की हड्डी को उसी ऐंगल से मोड़ा जाएगा, जिस ऐंगल से उस सिस्टम को ठीक होना है। डायबिटीज वाले को अलग होता है, अस्थमा वाले को अलग होता है, गठिया वाले को अलग होता है और जब तक वो अंग बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाता, तब तक योग होता रहेगा और इस प्रकार पहला बंध मूलाधार में लग जाएगा। खास तौर से रीड की हड्डी की एक्सरसाइज होगी, मगर साथ-साथ सारा शरीर भी मूवमेन्ट करेगा। क्योंकि इण्टरलिंक्ड है पूरा सिस्टम।

ज्यों ही कुण्डलिनी नाभी से ऊपर गई; दूसरा बंध (उड्डियान) लग जाएगा। ऑटोमेटिकली लगेगा, आप चाहकर वो बंध लगा ही नहीं सकते, आप चाहे कितने ही मोटे हो, नाभी रीढ़ की हड्डी से चिपक जाएगी। उसके बाद में वो ऊपर उठती-उठती कुण्डलिनी जब यहाँ से ऊपर उठ जाएगी, इसको कण्ठ कूप कहते है तो तीसरा बंध लग जाएगा इसे कहते है-जालन्धर बंध।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

इस योग में अक्लांत (अटूट) अध्यवसाय और धैर्य की आवश्यकता होती है।

शक्ति की इच्छा का अनुसरण करने के लिये यह आवश्यक है कि तुम प्रकाश, सत्य और सामर्थ्य को पाने के लिये उनकी ओर मुड़ो, **'यह अभीप्सा करो कि दूसरी कोई भी शक्ति तुम्हें प्रभावित या परिचालित न करे'**, अपने प्राण में किसी प्रकार की माँग या शर्त न रखो, अपने मन को इतना अचंचल रखो कि वह सत्य को ग्रहण करने के लिये तैयार रहे और अपनी ही धारणाओं और रचनाओं को पकड़े रहने के लिये हठ न करे-अंत में अपने हृत्पुरुष को जाग्रत रखो और सामने रखो। जिससे शक्ति के साथ तुम्हारा योग निरंतर बना रहे और तुम यह जान सको कि उनकी वास्तविक इच्छा क्या है? तुम्हारा मन और प्राण दूसरी-दूसरी प्रेरणाओं और सुझावों को भागवत इच्छा समझने की भूल कर सकते हैं, परंतु एक बार यदि हृत्पुरुष जग जाये तो वह कभी भूल नहीं करता।

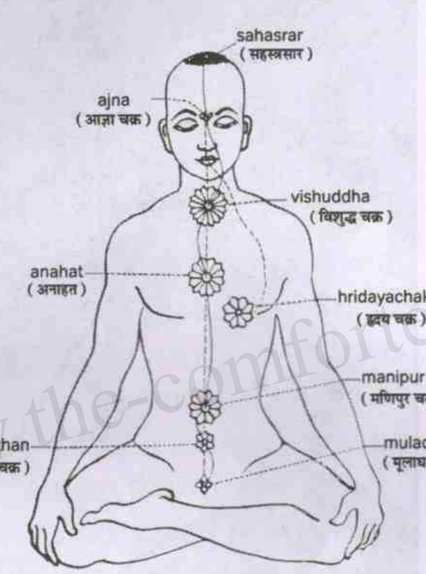

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

शक्ति की क्रिया में सर्वांगीण पूर्णता तो तभी आ सकती है, जब साधक का अतिमानसिक रूपांतर पूरा हो जाये; पर चेतना के निम्नतर स्तरों में भी अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से क्रिया हो सकती है, यदि साधक भगवान् के साथ अपना संस्पर्श बनाये रखे तथा अपने मन, प्राण और शरीर में सजग, सावधान और सचेतन बना रहे। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसी अवस्था है, जो साधक की "परम मुक्ति" के लिये अनिवार्य है और उसे उस मुक्ति के लिये तैयार करनेवाली है।

जो मनुष्य एकरस जीवन से डरता है और कुछ नवीनता चाहता रहता है, वह योग नहीं कर सकता अथवा कम-से-कम यह योग नहीं कर सकता। इस योग में अक्लांत (Inexhaustible) अध्यवसाय और धैर्य की आवश्यकता होती है। मृत्युभय का होना प्राण की एक दुर्बलता का लक्षण है और यह भी योगसाधना की योग्यता के विरुद्ध है। इसी प्रकार, जो मनुष्य अपनी निम्न वृत्तियों के वश में है, उसे भी योगसाधना कठिन मालूम हो सकती है, और अगर उसे एक सच्ची आंतरिक पुकार का तथा आध्यात्मिक चेतना और भगवान् के साथ एकता प्राप्त करने की एक सच्ची और सुदृढ़ अभीप्सा का सहारा न प्राप्त हो तो उसका सहज ही सर्वनाशी पतन हो सकता है और उसके सभी प्रयास निष्फल हो सकते हैं।

क्रमशः अगले अंक में... ❖❖❖

www.the-comforter.org

How does spiritual consciousness spread?

Spiritual consciousness spreads by the efforts of divine power. Effort by human mind is not going to be successful in this. Human effort can maximum be described as publicity with the help of scientific equipments.

On the basis of his knowledge and power, man can publicize spirituality for a long time. He can gather lakhs of people continuously by physical means. But any such kind of movement doesn't leave any kind of effect after it is over. People turned away when countless such movements didn't yield any result. When the number of such people increased, they got the courage to revolt and an open revolt started against the **religious teachers.**

Whatever is left with religious teachers of this era, they are not in a position to give anything beyond that. In order to control this ever-deteriorating situation, the religious teachers of this era tried to supress the revolt through arguments, show off, money. The more the religious teachers tried to gain control, the more the situation got out of hand. They were not left with anything apart from few men and women. They also stayed behind to save themselves due to the fear of their actions in their lifetime.

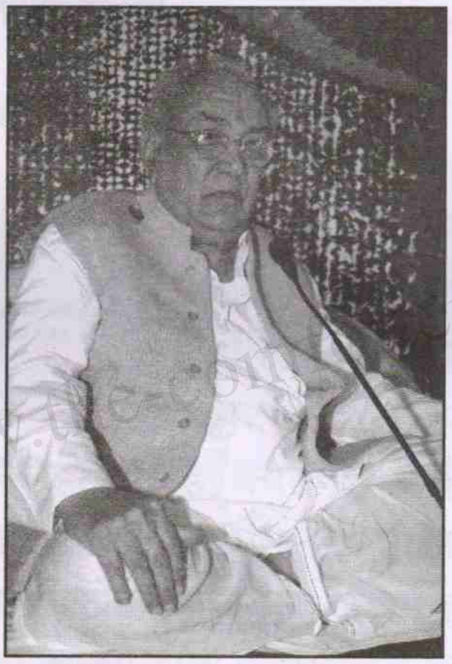

These powerless and helpless people, who are fearful of their own image are in no position to do anything. Religious teachers also know very well that they are being eaten up by the fear of plundering others by injustice and atrocity all their life. Understanding their weakness very well, religious teachersare trying to save themselves by explaining to them about sacrifice, penance, charity, sin etc. according to their own understanding.

The power to create is there in the rising sun. That's why the people of the world salute the rising sun, nobody salutes the sun when it is about to set. For how long can the helpless and powerless people of this era remain alive on the support of this setting sun is very clear. The way a person who is drowning cannot be saved by the support of a straw, in the same way this paper boat will sink. It is impossible to save it. History is witness to the fact that waning of every power is a sign of emerging of a new power. The man of this era doesn't believe in a system which doesn't yield any result. If God is there then after contacting him and by prayers, result should definitely come.

In the absence of any result, two questions arise in our mind- either there is no such power called GOD and if it is there then our message is not reaching HIM since all our saints

have told us that **GOD** is extremely merciful and all the religious scriptures are full of examples of God's kindness.

We see that there is no response to our prayers by the methods prevalent in this era. This means that our request letters do not have the right address on it. If the address would have been correct then reply would have come definitely.So, if the people of this era want to find that Supreme Power then it is very important to know the right address. Physical science has achieved its higher state and power by such a search and in the same way Spiritual science can also reach its highest state.

Now the time has come that the Supreme Power by revealing itself and by controlling the physical science that has actually been revealed by it, establishits kingdom of peace and happiness in the world. Till that Supreme Power reveals itself and governs its powers that have been revealed by it, it is impossible to establish peace and happiness in the world.

At this moment, all the achievements of physical science are under the control of demonic powers. The qualities of demonic tendencies are violence, hatred, envy and destruction. A lot of effort has been made through these powers hoping for creation but in its place, it is always destruction that has been making progress. From the beginning of this century, many political leaders tried to bring peace but they have failed completely. The first world war spread massive massacre and unrest in the world. The entire world was in turmoil and terrorized. Then the Heads of States of physically prosperous nations founded League of Nations in order to bring peace in the world.

This effort also failed and the second world war was more gruesome than the first one. Then United Nations Organisation (UNO) was founded in an effort to bring peace. But we can see that UNO also has completely failed to bring peace.

There is not a single moment in the world when the physical science has stopped massacre. For years in some or the other parts of the world massacre and war has been going on. All the efforts made by the highest powers of the world are failing. Now the massacre has started in all the fields of the world. Day and night more destruction is being caused in the world than in first two world wars. All external intellectual efforts have failed because peace comes from within. Peace has its relation with the heart.

So, without connecting with the Supreme Power from within by introverted prayer, peace is impossible.What development has occurred within me and my Gurudev is giving clear results in spiritual and physical world. All the people associated with me are receiving that supreme bliss and peace which the different saints have called as "Naam khumari" (intoxication of Gods' name) or "Naam Amal". Me and my Gurudev have ascended up to an extent that people who are connecting with me to travel on the same path are not experiencing any problems.

While ascending they are having direct experience of different strange "Lokas" which is filling them with

www.the-comforter.org

extreme bliss. From 'Mooladhaar' till 'Agam Lok' where they have reached, they are directly experiencing everything that has been described by our sages. Along with this any event related to subtle and causal body is being foretold by the spiritual powers and all are getting materialised in the physical world as foretold. With this the knowledge of the soul existing within these two bodies that has been told by our sages and the clear signs of which I have already seen is being directly experienced by my disciples.

Whatever Spiritual knowledge was being considered as myth or imaginary by the people of physical world is now being established as truth with countless proofs. All the powers of the world of Maya (Illusion) from 'Mooladhaar till 'Agyachakra' with its three attributes (Brahma,Vishnu, Mahesh) is being experienced directly. All these powers are being verified in physical world too. The world beyond 'Agyachakra' is completely 'saatvik' (pure and virtuous) and here the form of the word is constantly getting transformed into subtle form. So, the direct experiences one gets here cannot be completely expressed in human languages. In spite of all efforts, everyone is forced to say that whatever they are seeing or listening or experiencing they are finding themselves incapable of expressing it in a language. People have asked me many times if it will ever be possible to express these mysterious experiences in a human language?

I always give them the same reply that I had already told them in the beginning that spiritual knowledge is a subject of direct experience and self realisation. Human intellect and knowledge are not in a position to assist in any way in this. This is the only reason that I never gave any instructions and never suggested any rituals or outward form of worship. I always said that it is only by love, surrender, kindness, pure intentions that one can get something in this world. This knowledge cannot be achieved by worldly opulence.

Physical might (Bhowtiksatta) is a very minute dependent power. I can see that one who pierces through the three types of body and sees the light of soul even for a second getsthe knowledge of previous life. This way the more intimate connection one has with the soul, the more it is possible to have knowledge of previous many lives accordingly. This way the principle of reincarnation in our religion can also be physically verified through this. Today whatever is happening through me, is due to the grace of God and blessings of my Gurudev. Clear instructions for all the key activities of my life from the beginning till the end has been given by that supreme power. I am completely confident and assured with the proofs. Apart from this that supreme power is completely guiding me at every step on my path. The same 'saatvik'(pure) current starts running spontaneously in the seekers who get associated with the people who are connected with me.

5th March' 1988
Samarth Gurudev
Shri Ramalal Ji Siyag

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा ऋषिकेश में आयोजित सिद्धयोग प्रदर्शनी में आगन्तुक देशी-विदेशी सैलानियों की कुण्डलिनी जनित अनुभूतियाँ

-नये रास्ते को दिखाने के लिए बहुत धन्यवाद। आपके प्रसार से बहुत जन को लाभ हो रहा है, और आगे भी होगा, शुक्रिया।

-साधना कपूर
लुधियाना(पंजाब)

मैं पंजाब से हूँ। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी आँखें खुल रही थी। प्रभु से मिलने का सही समय है।

-मनीष,पंजाब

-मेरे द्वारा सहस्रार चक्र पर ध्यान की क्रिया का पूरा प्रभाव देखा गया तथा गुरुदेव की प्रतिमा के दर्शन हुये। जो कि एक अद्भुत दृश्य था। इस प्रकार कृष्ण फीलिंग में अद्भुत शक्ति का परिचय हुआ। **- एक साधक**

-ध्यान योग के दौरान पूरा शरीर हिलने लगा। मुझे लगा कि मैं मंत्र जाप करता रहूँ। बहुत अच्छा लगा। अब मैं हमेंशा ध्यान करूँगा।

-संतोष सिंह, बिहार

-यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। यहाँ पर ध्यान सिखाया जाता है। ध्यान योग, भारतीय योग दर्शन की एक अनिवार्य प्रक्रिया है।

-सुरेश कुमार, गोवा

-पहले हमने जोधपुर आश्रम से फोन कर सिद्धयोग दर्शन की जानकारी प्राप्त की, वहीं से हमें मालुम हुआ कि ऋषिकेश में भी सिद्धयोग प्रदर्शनी कार्यक्रम चल रहा है। आज गुरुदेव के दर्शन के बारे में समझ में आया। अब मैं नियमित रूप से ध्यान करता रहुँगा।

-अनिल कुमार

-विश्व गुरु भारत का ध्यान करने से मुझे एक नई ताजगी महसूस हुई। मंत्र स्वतः ही जपने लग गया। मुझे बहुत अच्छा लगा।

-शिखा त्रिपाठी,
बिसवाँ-सीतापुर

-ये अभ्यास करने से शक्ति महसूस हुई। उस शांति में एक अलग कल्पना भी हुई। जिसमें मुझे श्री कृष्ण संग राधा के दर्शन भी हुए। मुझे इस आभास में बहुत शांति मिली। कहीं से भी कोई शोरगुल सुनाई नहीं दिया। मेरी राय है कि इस असीम शांति के लिए सबको सिद्धयोग का

अभ्यास करना चाहिए।

-सौरभ त्रिपाठी,
सीतापुर

-जब मैंने ध्यान शुरू किया तो हिलने लगा। ध्यान के दौरान बहुत गहरी नींद का आभास हुआ। अब मैं नाम जप के साथ नियमित ध्यान करूँगा।

-गुरुप्रीत,
लुधियाना, (पंजाब)

1)I appreciate this experience. Thank you all for inviting me.

By **Julia Mayor**
From **Poland**

2)Thank you all for making me free from all burdens. All the very best. Good going.

By **Kajal Rajput**

3)Back pain relief.

By **Ritu Sharma**
From **Delhi**

4)I feel relieved from leg pain.

By **Nancy Koul**
From **Jammu(J&K)**

5)Very enlightening experience. Feel refreshed after meditation. Thanks to team.

By **Ravinder Kumar**

6)Pleasant experience. Felt at peace. Will continue. By **William**
from **Britain**

7)The mantra worked well for me. The two 'Klings' activating first and last chakra.

BY **Dirk**
from **Germany**

8)Very peaceful humbling experience. Thank you for spreading the technique.

By **Fuga**
from **Finland**

9)Feeling of oneness with universe.

By **Dr. Snehal**

10) I was feeling very light and no disturbance from outside.

By **Bikram Basnet**

11) Despite having it in noisy environment we were not listening to it at all. Some were deep into it. By **Krishna**

12) Thank you for

sharing this wonderful meditation practice. Simple and powerful.

By **Jyoti Kaur**
from **London, UK**

13) Peaceful experience.

By **Amar**

14) Thank you so much Gurudev Siyag. It is my first meditation. Made my mind so quiet and great experience.

By **Haugo Nakanish**
From **Tokyo, Japan**

15) Thank you for simple meditation. I felt energy. **Olga**
from **Russia**

16) Thanks for giving me the new idea of kundalini meditation. I am going to practice again in a quiet place.

-**Nanasie**
from **Poland**

17) I experienced by meditation with mantra peaceful sensation and flash lights in third eye.

By **Lara Munaz**
from **Spain**

18) I experienced a deep feeling of relaxation and peace.

By Alicia Caprun
from Spain

19) I experienced nice and increased understanding of everything.

By **Ashish Agarwal**

20) Felt good.

By **Nadia**
from **Switzerland**

21) Nice philosophy.

By **Sushant Varshney** and **Dalia**
from **Cairo, Egypt**

22) Good experience.

BY **Amah**
from **Denmark**

23) Thank you so much. It was a very good experience.

By **Sanjay Bohra**

24) It was a moment of peace with an amazing white light very bright, then a purple one for a long time.

25) Nice 15 minutes in peace.

By **Ales**
from
Czech Republic

26) Oneness I felt. Thanks for the platform

27) No Body feeling. Almost sweating.

By **Julia**
from **Switzerland**

28) Saw light by concentration.

By **Carin Basti Aansen**
from **Netherlands**

29) Beautiful experience.

By **Goretti**
from **Spain**

30) While meditating there was a tingling sensation between my eyebrow. Inexpressible experience I got through the meditation.

By **Dr. Kapil Dev Sharma**

गुरुदेव से की गई प्रार्थना से सब कुछ संभव है

पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी (ब्रह्मलीन) के पावन चरण कमलों में कोटि कोटि नमन्। विज्ञान की धारणा के अनुसार मुझे इस जन्म में संतान सुख नहीं लिखा था लेकिन गुरुदेव के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा संभव हुआ और **मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। गुरुदेव की असीम कृपा से ही मेरे घर खुशियों के बादल छाये।**

गुरुदेव की करूण कृपा से ही जीवन की हर छोटी बड़ी समस्याओं से निजात मिला और मिलता रहता है। गुरुदेव से जुड़ने के बाद जीवन जीने का आनंद आ रहा है। मेरे परिवार ने बहुत संघर्ष किया। देर से ही सही, गुरुदेव के सिद्धयोग की एक ऐसी लीला हुई, जो मेरे परिवार के लिए बहुत बड़ी घटना है। जिसकी कल्पना ही शायद कोई कर सके ! यह वाक्या नोटबंदी से जुड़ा हुआ है, जिससे दूसरों को फायदा हो या ना हो मेरे को जरूर हुआ था। गुरुदेव का चमत्कार कुछ इस प्रकार हुआ कि वर्षों पुराना लोन कुछ ही दिनों में ही चुकता हो गया।

मेरे पतिदेव ने बिजनेस के सिलसिले में बैंक से पाँच लाख का लोन लिया था। वर्ष 2010 में लिए गए इस लोन को जब बिजनेस चल रहा था तब तो आसानी से किश्तों को चुका रहे थे। डेढ़ साल के भीतर ही बिजनेस में पार्टनर द्वारा धोखाधड़ी कर देने से बिजनेस बंद हो गया। पूरा घाटा मेरे पतिदेव के ऊपर आ गया। बैंक की किश्तें भरने के लिए भी मुश्किलें आने लगी थी। जैसे-तैसे करके दो-तीन महीने में एक बार पेनल्टी के साथ किश्तें जमा करवाने लगे।

इस दौरान मेरे पतिदेव ने किसी दोस्त की मदद से दो लाख ब्याज पर उधार लेकर कम्प्यूटर सेल और रिपेयर एंड फोटोकॉपी की दुकान लगाई। इस बिजनेस में भी दो साल में घाटा लगने लगा क्योंकि बैंक की किश्त, दुकान का भारी भरकम किराया और उधार लिये गए रुपयों का ब्याज भारी पड़ रहा था। इसी के चलते अक्टूबर 2015 में दुकान बंद करनी पड़ी। बैंक की किश्तें बढ़ने से लोन का भार बहुत ज्यादा ही हो गया था। लोन की रकम चुकाने के लिए मेरे पास गहने थे उसको बेच कर भी पौने तीन लाख रुपये का ही लोन चुका पाये।

हम लगातार कर्जे से दबे जा रहे थे लेकिन समर्थ सद्गुरुदेव के प्रति भक्ति भावना अटूट बनी रही। सुबह शाम दोनों ही नियमित रूप से मंत्र जप के साथ ध्यान करते रहे। 2016 की दीपावली की रात को मैंने गुरुदेव की तस्वीर के आगे करूण प्रार्थना के साथ हठयोग कर ही लिया और रात भर बैठी रही। 8 नवम्बर 2016 की रात को नोटबंदी की घोषणा हुई और मेरे नजदीकी रिश्तेदारों की मदद से मेरा बैंक लोन चुकता हो गया।

इससे मुझे इतना संबल मिला कि जो काम मेरे लिये बेहद कठिन था वो एक झटके में हल हो गया।

जीवन का हर कार्य गुरुदेव की असीम कृपा से हो रहा है। ऐसे परमात्मा सद्गुरुदेव को बारबार नमन् और वन्दन करती हूँ।

-श्रीमती अनुसूया चौहान
नागौर

अज्ञ मानव-कोई व्यक्ति भला है या बुरा, विश्वास का पात्र है या नहीं, यह भी ठीक तरीके से हम जान नहीं पाते। प्रायः अयोग्य पात्र का विश्वास कर हमें दुःख झेलना पड़ता है। यहाँ तक कि अपनी पत्नी तथा सन्तान के चरित्र के बारे में दीर्घ साहचर्य तथा निरीक्षण के बाद जो धारणा हम बनाते है, वह भी सही नहीं हो सकती है। हम अपने भविष्य के बारे में भी उतने ही अज्ञ हैं:-अगले दिन की बात तो दूर रहे, क्षणभर के बाद क्या होगा, हम जीवित रहेंगे या नहीं, वह भी नहीं जानते। अतीत से भी हम किस हद तक परिचित है ? भूतकाल की बहुत सी घटनाओं का तो हमें स्मरण भी नहीं है। -श्री अरविन्द घोष

20 वर्ष पुरानी टी बी से निजात पाया

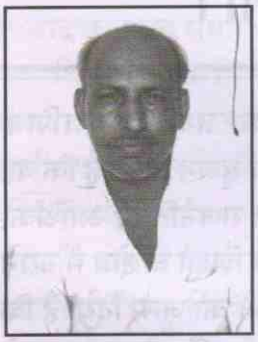

मैं बाड़मेर जिले के बालोतरा शहर में एक फैक्ट्री में एक मुनिम का कार्य करता हूँ। लगभग 20 वर्षों से टी बी से पीड़ित था। हर महीने 1500 से 2000 रुपयों की दवाई खा जाता था। थोड़ी से धूल उड़ने पर भी मुझे सांस की तकलीफ हो जाती थी। परिवार से भी सहारा हट चुका था। बहुत परेशान हो चुका था।

मेरे साथ बाड़मेर जिले की धोरीमन्ना पंचायत समिति का रहने वाला, गुरुदेव का एक शिष्य काम करता था। उन्होंने समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी का एक पेपर दिया और कहा कि इनके द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र के सघन जप और नियमित ध्यान से सब प्रकार के रोगों व नशों से मुक्ति मिल जाती हैं। मेरी राय है कि आप गुरुदेव का मंत्र जप व ध्यान करके देखो।

उस दिन शाम को ही मैंने गुरुदेव का ध्यान किया। मन में शांति का एहसास हुआ। फिर नियमित रूप से सुबह शाम मंत्र जप के साथ ध्यान करता रहता था और हर समय सघन मंत्र जप करता रहा।

सन् 2013 में जोधपुर आश्रम आकर गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा ली और दवाई के साथ साथ, गुरुदेव की आराधना करता रहा। पहले मेरा वजन 35 किलो पर आ गया था। सिर्फ हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था।

गुरुदेव की आराधना करने लगा उसके बाद मुझे लगभग एक साल लगा पूर्णत: ठीक होने में क्योंकि परिवार और पड़ौसी लोग मुझे भोपों व देवी-देवताओं के थानों पर जाने के लिए उकसाते रहते थे और मेरी धारणा बार बार विचलित होती रहती थी।

मुझे कहीं भी जाना अच्छा नहीं लगता था क्योंकि मुझे विश्वास हो गया था कि सिर्फ गुरुदेव का मंत्र जप और ध्यान से ही मुझे फायदा होगा। कुछ महीने तक तो मैं घर परिवार के बहकावे में आता रहा। मुझे आराधना से कुछ फायदा होता था लेकिन भटकाव में फिर नुकशान हो जाता था।

आखिर हारकर मैंने तय कर लिया कि अब चाहे मरू या जिऊँ, अब सिर्फ सद्‌गुरुदेव सियाग जी महाराज का ही मंत्र जप और ध्यान करूंगा।

उसके बाद मैंने एकाग्र होकर सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान शुरू कर दिया। कहीं भी श्रद्धा को केन्द्रित नहीं होने दिया। दिनोंदिन स्वास्थ्य में सुधार होता गया और आज 5 वर्ष से अधिक समय हो गया, मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। पिछले 20 साल से दवाईयाँ पर जीवन आधारित था। अब कोई दवाई नहीं ले रहा हूँ। मंत्र जप और ध्यान से जीवन बच गया।

अब मैं नियमित ध्यान कर रहा हूँ। विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वत: होती हैं, कई तरह की आवाजें आती हैं।

एक बार मेरे खेत में मुझे दादा गुरुदेव के दर्शन हुए।

अब मैं कह सकता हूँ कि सद्‌गुरुदेव सियाग के असीम आशीर्वाद से जीवन धन्य हो गया।

-ताराराम पालीवाल
गाँव-सिनली
तहसील-पचपदरा
जिला-बाड़मेर

गुरु-आदेश: – मैं संसार में इस ज्ञान को बाँटने के लिए ही मेरे 'गुरु' के आदेश से निकला हूँ। यह ज्ञान मात्र "गुरु कृपा" से ही प्राप्त होना संभव है। इसकी कीमत मात्र 'गुरु' के चरणों में पूर्ण समर्पण है। और किसी विधि या बौद्धिक प्रयास के यह ज्ञान प्राप्त होना असम्भव है।

इस समय मानव बुद्धि को बहुत बड़ी मानता है, परन्तु इस युग का मानव भूल जाता है, कि 'मन' बुद्धि को दिन में कई सब्जबाग दिखाकर चकमा दे जाता है। भारतीय योगदर्शन में 'मन' को स्थिर करके ही यह ज्ञान प्राप्त करने की क्रियात्मक विधि बताई गई है। -समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-मात्र सनातन धर्म ही विश्व शांति का रक्षक

"अतिमानव"

-महर्षि श्री अरविन्द

"आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।"

सनातन शास्त्र कहता है- 'सर्व खल्विदं ब्रह्म'-अर्थात् सब कुछ ब्रह्म है। मनुष्य, पशु, वृक्ष, लता, सोना, चाँदी, लोहा, पत्थर आदि सभी ब्रह्म है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार जड़ पदार्थों को विश्लिष्ट करने पर इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन आदि जो कुछ उपलब्ध होते हैं, वे सभी शक्ति के विभिन्न रूप है।

अतएव जड़ पदार्थ शक्ति का घनीभूत रूप है। इसीलिए शक्ति की बहुर्मुखी लीला के फलस्वरूप ही विभिन्न जड़ पदार्थों का उद्भव हुआ। हमारी मिथ्या दृष्टि में जड़ पदार्थों का यह घनीभूत रूप ही दीख पड़ता है।

वस्तुतः इसमें प्राण का आविर्भाव हुआ है-दो शक्तियों के दबाव से। उनमें से एक है-जड़ में निगुढ़ रूप में अवस्थित विकासोन्मुखा ऊर्ध्वमुखी प्राण शक्ति, तथा दूसरी है-ऊर्ध्व से अवतरण होने वाली प्राणशक्ति। इसके फलस्वरूप उद्भिद का जन्म हुआ, जिसके फलस्वरूप हमारी यह शुष्क पृथ्वी-वृक्ष, लता, पौधे, पय, पुष्प एवं फलों आदि से सुशोभित हो उठी।

अब उद्भिद में प्राण की जो सीमित अवस्था थी, वह दूर हुई। वह(प्राणी)एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकता था और उसमें आवेग अनुभव आदि प्राण की क्रियाएँ अधिकतर सुस्पष्ट और शक्तिशाली थी। इसी तरह जब प्राण की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई, तब मानव लोक से 'मन' नामक एक नवीन तत्त्व का इस पृथ्वी पर अवतरण हुआ। जिस नियम के अनुसार प्राण का अवतरण हुआ था, ठीक उसी के अनुसार ही 'मन' का भी अवतरण हुआ। फिर आया 'मानव'-जो पूर्णरूपेण भिन्न प्रकार का जीव है। पशु के साथ मानव का, जमीन-आसमान का भेद है। कालान्तर में आदिम युग का गुह्य निवासी मानव विवर्तन की धारा में क्रमशः वर्तमान सभ्य मानव में परिणत हो गया। उसने समाज तथा राष्ट्र का गठन किया, राजनीति, अर्थनीति तथा समाजनीति की रचना की और साथ ही अपूर्व सुन्दर साहित्य कला तथा शिल्पादि का सृजन किया।

प्रकृति को उसने वशीभूत किया है-आज उसकी यात्रा एक ग्रह से दूसरे ग्रह की ओर हो रही है। एक ओर जहाँ उसने अपार सफलता प्राप्त की है, वही दूसरी ओर उतनी ही विफलता प्राप्त की है। सभ्यता के प्रसार एवं प्रगति के साथ ही उसने बहुत सी समस्याओं को जन्म दिया है, जिनमें एक का भी समाधान करने में वह असमर्थ है। प्रचुर धनोपार्जन एवं मिलों तथा कारखानों की स्थापना के बाद भी करोड़ों आदमी भूख से मर रहे हैं। कड़ाके की ठंड और प्रखर गर्मी से बचने के लिए थोड़ा सा आश्रय भी उपलब्ध नहीं है। अगर वह चाहे तो इतना खाद्यान्न उत्पन्न कर सकता है, इतने गृहों का निर्माण कर सकता है कि सारे संसार के लोगों की आवश्यकताएँ पूरी हो जाए। पर उसने ऐसी आर्थिक तथा सामाजिक जटिलताओं का सृजन किया है कि यह सम्भव नहीं है। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में उसने इतनी समस्याओं को जन्म दिया है कि उससे वह बच नहीं सकता। इसके अतिरिक्त जीवन के सभी क्षेत्र में है-अन्याय, अविचार, अत्याचार एवं दुर्नीति। आज प्राचुर्य के बीच में भी उसके अभाव तथा दुःख की सीमा नहीं है।

इस दुःख-दुर्दशा को दूर करने के लिए, वह सदियों से जी-तोड़ प्रयास करता आ रहा है, परन्तु उसे सफलता नहीं मिली है। अतः संसार में अनेक रक्तपात तथा क्रांतिकारी घटनाएँ घटित हुई हैं-जिनके फलस्वरूप एक दुःख का निराकरण के साथ ही दूसरे का उद्भव हुआ है। यह रहा मानव प्रगति का इतिहास। वर्तमान मानव, अगर 'मानव' मात्र ही रह जाए, अर्थात् चेतना के जिस स्तर में वह अभी है, उसी पर ही रह जाए और 'ऊर्ध्वतर' किसी स्तर पर नहीं पहुँच सके तो उसकी समस्याओं का समाधान कदापि नहीं होगा।

इस संदर्भ में श्री अरविन्द ने प्रश्न किया है कि "क्या विविध क्षमता एवं अक्षमता सम्पन्न वर्तमान मानव ही सृष्टि की पराकाष्ठा है या मानव की एक ऐसी नवसृष्टि संभव है जो उसकी सभी अक्षमताओं का अतिक्रमण कर अपने तथा संसार के जीवन को स्वर्गीय जीवन में परिणत कर सकेगी?"

''विवर्तन की वह शक्ति जो क्रम-विकास की धारा में जड़ को मानव में अभिव्यक्त किया है, मानव सृष्टि के बाद क्या वह समाप्त हो जाएगी?''

विज्ञान कहता है-नहीं, वह शक्ति खत्म नहीं हुई है। मानव में वह शक्ति, अभी ज्यों-की-त्यों ही है। इस शक्ति की सक्रियता के कारण मानव की क्या परिणति होगी? विज्ञान उसके संबंध में हमें सही दिशा-निर्देश नहीं दे सकता। मानव की सभी वृत्तियाँ तथा मानसिक और दूसरी शक्तियाँ और भी अधिक विकसित होगी, विज्ञान केवल इतना ही कह सकता; किन्तु श्री अरविन्द ने कहा है कि ''यह विवर्तनी शक्ति मानव को एक उच्चतर चेतना के स्तर पर प्रतिष्ठित करेगी। मानव से अतिमानव का सृजन करेगी। यह अतिमानव, मानव का उन्नत रूप मात्र ही नहीं, वह मनुष्य से पूर्णरूपेण भिन्न जीव होगा। पशु और मानव के बीच जो पार्थक्य है, अन्तर है, भिन्नता है। मानव और अतिमानव में वह पार्थक्य कहीं अधिक होगा। मानव में जो दोष, अक्षमता, अपूर्णता तथा क्षुद्रता है, अतिमानव में वे सब दृष्टिगोचर नहीं होगी।''

संदर्भ-'श्रीअरविन्द की शिक्षा एवं योग' नामक एक छोटी पुस्तिका से

मानव से अतिमानव की इस यात्रा और विकास के लिए समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालज जी सियाग ने पृथ्वी पर अवतरित होकर, मानव को अपने पूर्ण विकास के लिए, आराधना का एक पथ बताया है-संजीवनी मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान।

एकमात्र यही पथ है ,जिससे मानव असंख्य कष्टों, दुःखों, रोगों, नशों व अन्यन्य समस्याओं से मुक्त हो सकता है। करके देखिए !

❖❖❖

एकनिष्ठता

''सब धर्मों को त्याग कर केवल एक मुझ सच्चिदानन्द परमात्मा की ही शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, मैं यह दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ। तू शोक मत कर। -गीता

भारतवर्ष के दो महामंत्र

1905 में लार्ड कर्जन ने बंग-भंग की घोषणा करके भारत में सुलगती राष्ट्रीयता की धीमी-धीमी आंच में घी डाल दिया। सारा बंगाल एकदम से विद्रोही बनकर उठ खड़ा हुआ। बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास ''आनंद-मठ'' का एक गीत 'वंदे मातरम्' नव जागरण का मंत्र बन गया। श्री अरविन्द ने अपने भाषण में उसे केवल भारत का ही नहीं, समस्त एशिया के जागरण का मंत्र बतलाया था। अंग्रेज सरकार 'वंदे मातरम्' जैसे सुमधुर, कोमल शब्दों से ही बौखला उठती थी। शायद बंकिम ने स्वप्न में भी कल्पना न की होगी कि उनका यह गीत इतना महान् आह्वान् मंत्र बन जाएगा। गीत तो बड़ा है पर उसके कुछ अंश ही लिये गए है।

परतंत्र भारत में इस मंत्र ने पूरे एशिया में एक नई जान फूँक दी। जब हजारों युवा और बुजूर्ग एक साथ हृदय की मर्मज्ञ करतल ध्वनि के जयकारे लगाते थे तो अंग्रेजों के रूंह काँप उठते थे, ऐसी गूँज होती थी। आखिर अंग्रेजों को हारकर भारत छोड़ना पड़ा। यह थी बाहर की आजादी जो हमने 1947 में ही प्राप्त कर दी थी लेकिन असली आजादी जो हमें भीतर से प्राप्त करनी है, वो अभी बाकी है और वह आजादी तो गुरुदेव द्वारा दिये गए 'संजीवनी मंत्र' के सघन जप से ही संभव है। इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने 19 फरवरी 1908 में कहा था कि -

''जब एक महान् जन समुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौनसा मंत्र, संजीवनी मंत्र है अथवा उसे पुनर्जीवित करने वाली कौनसी शक्ति है? भारत में दो महामंत्र है, एक तो ''वन्दे मातरम्'' का मंत्र है, जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है। और दूसरा अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है जो अभी उद्घाटित नहीं हुआ है।''

वह मंत्र अब उद्घाटित हो चुका है और वह है-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा दिया जाने वाला संजीवनी मंत्र, जो गुरु वाणी में, सुनने से ही परिणाम देता है। इस मंत्र के जप से लाखों लोगों में बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन आ रहा हैं।

www.the-comforter.org

वंदे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम्
मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित
द्रुमदल शोभनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर
भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।।
त्रिंश कोटि कंठ,
कल-कल निनाद कराले
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत
खरकरवाले
अबला कैनो मा ऐतो बोले !
बहुबल धारिणीम्,
नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम्।।
श्यामलाम् सरलाम्
सुस्मिताम् भूषिताम् धरणीम् भरणीम्
मातरम्।।

❖❖❖

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा मुम्बई द्वारा अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई में प्रत्येक रविवार को सिद्धयोग शिविरों का आयोजन।

अन्तर्राष्ट्रीय योग फेस्टिवल, ऋषिकेश 1–7 मार्च 2019, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। सिद्धयोग दर्शन से रूबरू हुए देशी–विदेशी पर्यटक।

अन्तर्राष्ट्रीय योग फेस्टिवल, ऋषिकेश 1–7 मार्च 2019, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। सिद्धयोग दर्शन से रूबरू हुए देशी–विदेशी पर्यटक।

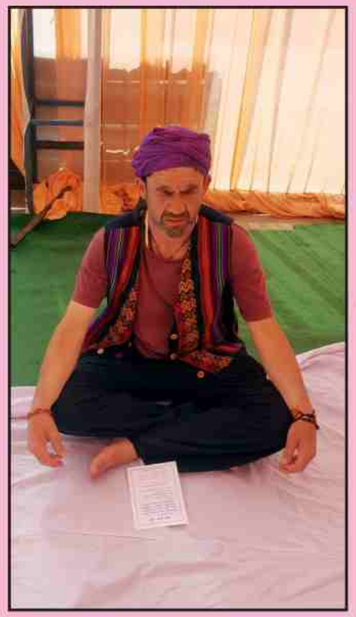

तस्वीर से ध्यान

''मुझे दोनों सिद्धियों हो गई। पहले गायत्री (निर्गुण) की, फिर 1984 में कृष्ण (सगुण) की। श्री अरविन्द ने कहा है कि अगर दोनों सिद्धियाँ, एक ही व्यक्ति में, एक ही जन्म में हो जाए तो वो अमर हो जाएगा। मतलब ''पार्थिव अमरत्व'' (Terrestrial Immortality), इस दुनिया में रहते हुए अमर हो जाएगा। इसलिए मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है।

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो ? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्ति पात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता एवं याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

कहानी

सद्गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि

'अग्या सम न सुसाहिब सेवा।'

भगवान् श्री कृष्ण ने सांदीपनि ऋषि से विद्याध्ययन किया था। सांदीपनि उनके विद्या गुरु थे। वे सांदीपनि ऋषि जब बाल्यावस्था में अपने गुरु के पास पढ़ते थे, तब उन्होंने गुरु की विशेष सेवा की थी। एक बार गुरुजी के मन में सांदीपनि की परीक्षा लेने का विचार आया। एक बार विद्यार्थी बाहर गये हुए थे। गुरुजी का एक बालक था, जो वहाँ मिट्टी में खेल रहा था। जब गुरुजी ने विद्यार्थियों को आते हुए देखा, तब उन्होंने अपने बालक की ओर संकेत करते हुए सांदीपनि से कहा कि इसको कुएँ में डाल दे। सांदीपनि ने बालक को उठाकर कुएँ में डाल दिया!

विद्यार्थियों ने देखा तो वे दौड़ते हुए आये कि अरे! इसने गुरुजी के बालक को कुएँ में डाल दिया। कुएँ का जल नजदीक ही था। विद्यार्थी उसमें कूदे और बालक को उठाकर बाहर ले आये। अब विद्यार्थी सांदीपनि को मारने लगे। सांदीपनि उनकी मार सहता रहा, पर यह नहीं बोले कि गुरुजी ने ही तो कहा था। गुरुजी ने विद्यार्थियों को रोका कि इसको मारो मत, तुम्हारा गुरुभाई है।

एक दिन की बात है, विद्यार्थी कहीं से आ रहे थे। उनको आते देखकर गुरुजी ने सांदीपनि से कहा कि इस छप्पर को आग लगा दे। सांदीपनि ने चट आग लगा दी।! विद्यार्थियों ने दौड़कर आग बुझायी और सांदीपनि को मारने लगे कि गुरुजी के घर को जलाता है। सांदीपनि कुछ बोले नहीं, चुपचाप मार सहते रहे। गुरुजी ने विद्यार्थियों को रोका।

संदीपनि बहुत विशेष बुद्धिमान भी नहीं थे और जड़ बुद्धि भी नहीं थे, मध्यम बुद्धि के थे। परंतु उनमें यह विशेषता थी कि गुरुजी जो आज्ञा देते थे, वे चट वह काम कर देते थे। श्रेष्ठ पुरुषों की सबसे बड़ी सेवा है उनकी आज्ञा का पालन करना-'अग्या सम न सुसाहिब सेवा।' आज्ञापालन में जितनी देर करेंगे, उतनी ही शक्ति कम होती जाएगी। इसलिये सांदीपनि अपने गुरुजी की आज्ञा को नीचे नहीं गिरने देते थे अर्थात् उस पर विचार किये बिना तत्काल वह काम कर देते थे-'आज्ञागुरुणां ह्यविचारणीया।'

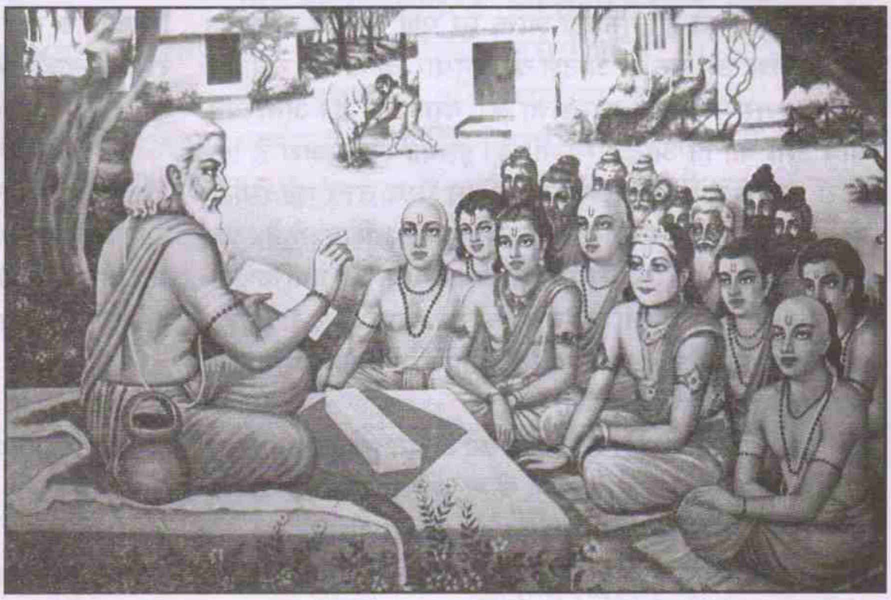

जब विद्याध्ययन समाप्त हुआ, तब विद्यार्थी अपने-अपने घर चले गये। उनमें से कई अच्छे पण्डित बन गये। सांदीपनि भी अपने घर चले गये। पीछे एक दिन गुरुजी महाराज बहुत बीमार पड़ गये। उनकी बीमारी का समाचार सुनकर शिष्य लोग उनके दर्शन के लिये आये। गुरुजी के शरीर छोड़ने का समय आया तो उन्होंने अपने शिष्यों को वस्तुएँ दीं। उन्होंने किसी को पंचपात्र दे दिया, किसी को आचमनी दे दी, किसी को पवित्री दे दी, किसी को आसन दे दिया, किसी को माला दे दी, किसी को गोमुखी दे दी, आदि-आदि। शिष्यों ने उन वस्तुओं को बड़े आदर से लिया कि गुरु महाराज की प्रसादी है!

जब सांदीपनि, गुरुजी के सामने आये तो गुरुजी चुप हो गये, फिर बोले कि बेटा! तुझे क्या दूँ? तुझे देने योग्य कोई वस्तु मेरे पास है ही नहीं! तेरी जो गुरु भक्ति है, उसके समान मेरे पास कुछ नहीं है। परन्तु मैं तुझे आशीर्वाद

देता हूँ कि त्रिलोकीनाथ भगवान्, एक दिन तेरे शिष्य बनेंगे। बाद में इन्हीं सांदीपनि ऋषि के पास आकर भगवान् श्री कृष्ण ने अपने परम स्नेही मित्र सुदामा के साथ शिक्षा ग्रहण की।

इस कहानी का सार तत्त्व यही है कि एक शिष्य के लिए सर्वोत्तम सेवा है अपने सद्गुरुदेव की आज्ञा का पालन करना।

जो सद्गुरुदेव ने कह दिया, वही शिष्य के लिए ब्रह्म वाक्य है।

सद्गुरुदेव की आज्ञा के विपरीत चलना, बहुत बड़ा अनर्थ है। चाहे लोक दृष्टि में वह प्रचार कर रहा है, लोगों द्वारा प्रसंशा का पात्र बन रहा है लेकिन वह सद्गुरु के ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता है।

प्राचीन काल की एक कथा के अनुसार समुद्र मंथन में 14 रत्नों में से एक अमृत भी निकला था। अमृत पीने वाला अमर होगा। यह भगवान् विष्णु का व्याख्यान था। अमृत देवताओं के हिस्से में आया। जिस दिन अमृत पिला रहे थे, उस दिन छलकपट से राहू-केतु नाम एक राक्षस देवताओं की पंक्ति में अमृत पीने के लिए खड़ा हो गया। भगवान् विष्णु देवताओं को अमृत पिला रहे थे। ज्योंकि राहू को अमृत पिलाया और मालुम हो गया। भगवान् के सुदर्शन चक्र ने राहू का गला काट दिया और अमृत उसके शरीर में प्रवेश कर ही नहीं पाया, इसलिए कहा है-

मान सहित विष खाय के,
शंभु भये जगदीश।
बिना मान अमृत पीये,
राहू कटायो शीश।।

भगवान् शिव लोक कल्याण के लिए मान सहित विष खाकर भी नीलकण्ठ और जगत् के ईश्वर बन गये और छल कपट और आज्ञा के विपरीत राहू ने अपना सर्वनाश करवा दिया।

इससे यह बात सिद्ध होती है कि **'न तो विष में विष था और न ही अमृत में अमृत था। सिर्फ गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि है।'**

एक शिष्य को अपने आत्म कल्याण के लिए अपने सद्गुरुदेव की आज्ञा का पालन, पूर्ण निष्ठा से करना चाहिए।

'चेतना का स्तर'

www.the-comforter.org

जैसे जैसे शक्ति अपनी चेतना को पुनः प्राप्त करती जाती है, वैसे ही अपनी शक्ति अन्य सब शक्तियों पर अधिकार पाती जाती है; क्योंकि सचेत होना है-समर्थ होना। परमाणु जो तेजी से घूम रहा है अथवा मनुष्य जो जीवनचक्र में घूम रहा है और मानस के कारखाने में परिश्रम कर रहा है, वह अपनी मानसिक, प्राणिक अथवा आणविक शक्तियों का स्वामी नहीं है; वह तो चक्कर ही काटे जा रहा है।

इसके विपरीत चेतन स्तर पर हम मुक्त होकर स्वामी बन जाते हैं। तब हमें स्पष्ट प्रमाण मिल जाता है कि चित् एक शक्ति है, एक द्रव्य है जिसका उसी तरह उपयोग किया जा सकता है जिस तरह लोग ऑक्साइडों और विद्युत क्षेत्रों से काम लेते हैं। श्री अरविन्द का कहना है, **''यदि मनुष्य अन्दर ही चेतना से अवगत हो जाये तो उसके द्वारा बहुत कुछ कर सकता है, उसे शक्ति प्रवाहवत् बाहर भेज सकता है, अपने चारों ओर चेतना का घेरा या दीवार बना सकता है, किसी विचार को ऐसे लक्ष्य करके भेज सकता है कि वह अमेरिका में स्थित किसी व्यक्ति विशेष के मस्तक में प्रवेश करे, इत्यादि। वे आगे बताते हैं, यह अदृश्य पराशक्ति अन्दर और बाहर प्रकट परिणाम उत्पन्न करे, यही तो यौगिक चेतना का सारा उद्देश्य है।''**

यदि हमें हजारों बार ऐसे अनुभव न हो चुके होते, जो यह सिद्ध कर चुके हैं कि मानस में परिवर्तन करना, उसकी क्षमताओं का विकास करना, उसे नई क्षमताएँ प्रदान करना, ज्ञान के नए क्षेत्र खोलना, प्राण की चेष्टाओं को वश में लाना, चरित्र में परिवर्तन करना, मनुष्यों और वस्तुओं पर प्रभाव डालना, शरीर की अवस्था और अंगों के कार्य निष्पादन पर नियन्त्रण रखना, एक ठोस गतिशील महाशक्ति के रूप में विभिन्न शक्तियों पर कार्य करना, घटनाओं में परिवर्तन करना इत्यादि, आन्तरिक शक्ति के लिए संभव है।

'चेतना की अपूर्व यात्रा'
पुस्तक पृष्ठ-84-85

गतांक से आगे...

!!मेरे गुरुदेव!!

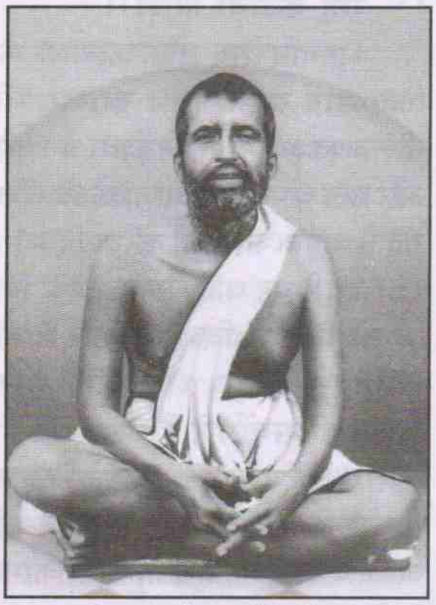

यदि तुम हिन्दुओं को राजनीति सिखाने जाओ तो वहाँ के लोग उसे नहीं समझेंगे, परन्तु यदि वहाँ किसी धर्म का प्रचार करने जाओ, और वह धर्म चाहे जितना विचित्र क्यों न हो, थोड़े ही समय में तुम्हें सैकड़ों अथवा हजारों अनुयायी मिल जायँगे और शायद अपने जीवन-काल में ही तुम इन अनुयायियों के लिए ईश्वरवत् बन जाओ। मुझे हर्ष है कि भारत में ऐसा है, वहाँ हम इसे ही चाहते हैं।

हिन्दुओं में पंथ अनेक हैं और उनमें से कुछ तो परस्पर घोर विरोधी प्रतीत होते हैं। परन्तु वे सब कहते हैं कि वे एक ही धर्म के विभिन्न प्रकाश मात्र हैं। जिस प्रकार भिन्न भिन्न नदियाँ विभिन्न पर्वतों से निकलकर टेढ़ी-मेढ़ी या सीधी बहकर अन्त में आकर एक ही समद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार भिन्न भिन्न दृष्टिकोणोंवाले भिन्न भिन्न धर्मपंथ अन्त में तुम्हीं में मिल जाते है।' यह केवल शाब्दिक तत्त्वज्ञान नहीं है, वरन् यह एक ऐसा सत्य है, जो हम सभी को मान्य होना चाहिए। परन्तु यह इस प्रकार नहीं माना जाना चाहिए, जैसे कुछ लोग अनुग्रहपूर्वक दूसरों के धर्म की कुछ बातें सत्य मानते हैं। उदाहरणार्थ वे कह देते हैं...हाँ, हाँ, इनमें कुछ बातें बड़ी अच्छी हैं। ये मूर्तिपूजक धर्म हैं। इन धर्मों में कुछ न कुछ अच्छी बातें रहती ही हैं, आदि आदि। कुछ लोगों की बड़ी विलक्षण कल्पना होती है, जो बड़ी 'उदार' सी प्रतीत होती है, वे कहते हैं कि अन्य सब धर्म प्रागैतिहासिक विकास के क्षुद्र चिह्न स्वरूप हैं, किन्तु केवल हमारे ही धर्म ने सम्पूर्णता प्राप्त की है।

एक मनुष्य कहता है कि मेरा धर्म सबसे प्राचीन है, अतः सर्वश्रेष्ठ है। दूसरा कहता है कि मेरा धर्म सर्वोत्तम है, क्योंकि वह सबसे आधुनिक है। पर हमें यह समझ लेना चाहिए कि मोक्ष-प्राप्ति की शक्ति प्रत्येक धर्म में समान है। मन्दिर अथवा गिरजाघर में जो धर्मों का भेद-भाव दिखायी देता है, वह कुसंस्कार मात्र है।

एक ही परमेश्वर सभी की पुकारों को सुननेवाला है। और वही एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर इस अति क्षुद्र जीवात्मा की रक्षा तथा मुक्ति का जिम्मेदार है-...न तुम, न मैं तथा न अन्य कोई दूसरा पुरुष ही। मैं यह नहीं समझ पाता कि कुछ लोग यह कहते हुए भी कि मैं ईश्वर में पूर्ण श्रद्धा रखता हूँ, यह भाव कैसे रखते हैं कि ईश्वर ने कुछ थोड़े से ही लोगों को सब सत्य का ठेका दे दिया है और वे ही सारी शेष मनुष्य जाति के संरक्षक हैं। इसे तुम 'धर्म' कैसे कह सकते हो ? धर्म का अर्थ है आत्मानुभूति, परन्तु केवल कोरी बहस, खोखला विश्वास, अँधेरे में टटोलबाजी तथा तोते के समान पूर्वजों के शब्दों को दुहराना और ऐसा करने में धर्म समझना, एवं धार्मिक सत्य में से कोई राजनीतिक विष ढूंढ़ निकालना--यह सब 'धर्म' बिल्कुल नहीं है।

प्रत्येक पंथ में, यहाँ तक कि इस्लाम पंथ में भी, जिसे हम अत्यन्त दुराग्रही समझते हैं, हम यही देखते हैं कि जब कभी किसी मनुष्य ने आत्मज्ञान प्राप्त करने का यत्न किया, तो उसके मुँह से यही ज्वलंत शब्द निकले...'हे **ईश्वर, तू ही सबका नाथ है**, तू ही सबके हृदय में वास करता है, तू ही सबका मार्ग-प्रदर्शक है, तू ही सबका गुरु है और तू ही हम सभी की अपेक्षा अनन्त रूप से इस विश्व का रक्षक है।

किसी मनुष्य की श्रद्धा नष्ट करने का प्रयत्न मत करो। यदि हो सके तो उसे जो कुछ अधिक अच्छा हो दे दो, यदि हो सके तो जिस दर्जे पर वह खड़ा हो, उसे सहायता देकर ऊपर उठा दो--परन्तु जिस स्थान पर वह था, उस जगह से उसे नीचे मत गिराओ। सच्चा गुरु वही है, जो क्षण भर में ही अपने को हजारों व्यक्तियों में परिणत कर सके।

सच्चा गुरु वही है, जो विद्यार्थी को सिखाने के लिए विद्यार्थी की ही मनोभूमि में तुरन्त उतर आये और अपनी आत्मा अपने शिष्य की आत्मा में एकरूप कर सके तथा जो शिष्य की ही दृष्टि से देख सके, उसी के कानों से सुन सके तथा उसीके मस्तिष्क से समझ सके। ऐसा ही गुरु शिक्षा दे सकता है...अन्य दूसरा नहीं। अन्य सब निषेधक, निरुत्साहक तथा संहारक गुरु, कभी भलाई नहीं कर सकते।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

"उनके कई कमाल मैंने देखो हैं। पातंजलि' प्रणीत प्राचीन अष्टांग योग के विभिन्न प्राणायाम विधियों में वे निष्णात हैं। एक बार भादुड़ी महाशय ने मेरे सामने भस्त्रिका प्राणायाम इतने जोर से किया कि लगता था मानो उस कमरे में सचमुच का तूफान आ गया हो !

फिर उन्होंने गर्जन करते श्वासोच्छवास को बंद कर दिया और वे अतिचेतनता" (समाधि) की एक उच्च अवस्था में निश्चल बैठे रहे। तूफान के बाद शान्ति का वातावरण इतना प्रभावपूर्ण था कि उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।"

"मैंने सुना है कि वे कभी घर से बाहर नहीं निकलते।" उपेन्द्र के स्वर में कुछ अविश्वसनीयता झलक रही थी।

"वास्तव में यह सच है ! विगत बीस वर्षों से, वे घर के भीतर ही रहते आये हैं। केवल हमारे पर्व-त्यौहारों के अवसर पर वे स्वयं ही लगाये, इस नियम को थोड़ा ढीला करते हैं। जब वे अपने ही अहाते में स्थित सामने की पगडंडी तक जाते हैं ! वहाँ पर भिखारी जमा हो जाते हैं क्योंकि सन्त भादुड़ी अपने दयार्द्र हृदय के लिये प्रसिद्ध हैं।"

"गुरुत्वाकर्षण के नियम को ठुकराकर वे हवा में कैसे रह पाते हैं ?"

"कुछ प्राणायामों के अभ्यास से योगियों के शरीर की जड़ता नष्ट हो जाती है। तब उनका शरीर हवा में उठ जाता है या फिर मेंढक की तरह यहाँ से वहाँ फुदकने लगता है। जो सन्त योगाभ्यास नहीं करते, वे भी ईश्वर के प्रति तीव्र भक्ति की अवस्था में हवा में ऊपर उठते पाये गये हैं।"

"इस सन्त के विषय में, मैं अधिक जानता चाहता हूँ। क्या तुम उनकी सांयकालीन सभाओं में जाते हो?" उपेन्द्र की आँखें कौतुहल से चमक रही थीं।

"हाँ, मैं प्रायः जाता हूँ। उनके उपदेशों में विद्यमान विनोदपूर्ण चुटकियों और हास-परिहास में, मुझे बड़ा मज़ा आता है। कभी-कभी मेरे लंबे अट्टहास से सभा की गंभीरता भंग हो जाती है। भादुड़ी महाशय तो उसका बुरा नहीं मानते किन्तु उनके शिष्य खा जाने वाली नजरों से मेरी ओर देखते हैं।"

उस दिन दोपहर को स्कूल से घर लौटते समय, मैं भादुड़ी महाशय के एकान्त निवास के पास से गुजर रहा था तो उनका दर्शन करने की इच्छा हो गयी। जनसाधारण के लिये उनका दर्शन था। निचली मंजिल पर अकेला रहने वाला उनका एक शिष्य इस बात का ध्यान रखता था कि उनके एकान्त में खलल न पड़े। यह शिष्य कुछ ज़्यादा ही अनुशासनप्रिय व्यक्ति था। उसके गुरुदेव उसी समय वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने मुझे अविलम्ब "बहिर्गत" किये जाने से बचा लिया।

"मुकुन्द जब भी आना चाहे, उसे आने दिया करो।" सन्तवर की आँखें चमक उठीं। "एकान्त का मेरा नियम मेरी अपनी सुविधा के लिये नहीं बल्कि लोगों की सुविधा के लिये है। संसारी लोगों को उनके मोहजाल को तहस-नहस कर देनेवाली स्पष्टवादिता अच्छी नहीं लगती। सन्त न केवल दुर्लभी हैं, बल्कि वे लोगों को व्याकुल भी कर देते हैं। शास्त्र-पुराणों में भी वे प्रायः जनसाधारण को विह्वल करते पाये जाते हैं।"

मैं भादुड़ी महाशय के पीछे-पीछे ऊपरी मंजिल पर स्थित उनके अत्यन्त सादे कक्ष में जा पहुँचा, जहाँ से वे शायद ही कभी बाहर निकलते थे। संसार की क्षुद्र उत्तेजनाओं के तीव्र गति से नित्य बदलते चित्रों की ओर संतजन प्रायः कोई ध्यान नहीं देते; केवल युग-युगान्तर में स्थित हुए कालजयी सत्यों पर उनका ध्यान केन्द्रित रहता है। सन्तों के समकालीन लोग केवल उनके संकीर्ण वर्तमान के लोग ही नहीं होते।

"महर्षि ! जहाँ तक मैं जानता हूँ, आप पहले ऐसे योगी हैं, जो हमेशा घर के अन्दर ही रहते हैं।

"भगवान् कभी-कभी अपने सन्तों को अप्रत्याशित परिस्थितियों में डाल देते हैं, कि कहीं हम यह न सोचें कि हम सन्तों को एक विशिष्ट नियम की चौखट में बिठा सकते हैं।"

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के बारे में

भौतिकतावादी आन्दोलन, संन्यास वृत्ति और दार्शनिक तथा धार्मिक नकार से ज्यादा अस्वाभाविक और असाधारण होते हैं। संन्यास मार्ग आदि हमें कम-से-कम ऊपर की ओर तो ले जाते हैं। यद्यपि वे हमारी मानव जाति के लिये भयंकर रूप से तेज हो जाते हैं लेकिन भौतिकतावादी हमें प्रकृति की ओर लौटा लाने के बहाने हमें उससे एकदम अलग ले जाता है। वह भूल जाता है या देख ही नहीं पाता कि प्रकृति केवल **इहलौकिक दृष्टि** से प्रकृति है, वास्तव में वह भगवान् है। उसके अंदर भागवत तत्त्व वह है जो वह शुद्धतम और वास्तविक रूप में है, बाकी सब उसके गुप्त भागवत तत्त्व के उत्तरोत्तर विकास करते हुए, अन्तःप्रकाश में केवल अवस्था, स्थिति, प्रक्रिया और पड़ाव हैं।

वह यह भी भूल जाता है कि प्रकृति का विकास हो रहा है, वह विकसित नहीं है और हम अभी जो हैं वह, भविष्य में जो होंगे उसकी अवस्था या सीमा हर्गिज नहीं है। वस्तुओं के तर्क के अनुसार प्रकृति की गतियों का लक्ष्य और उद्देश्य होना चाहिये **अतिप्राकृतिक**। अगर हम पूर्णयोगी बनना चाहते हैं और निश्चय के साथ अपनी भागवत पूर्णता की ओर चलना चाहते हैं तो हमें सबसे पहली चीज यह सीखनी है कि हमें प्रकृति के जाल में या उसके डोरों में फंसना या बंधना न चाहिये और साथ ही उससे कुपित होना या उसे नष्ट भी न करना चाहिये। सभी सत्ताएँ, यहाँ तक कि **ऋषि-मुनि** भी अपनी प्रकृति का अनुसरण करते है तो उस पर दबाव डालने या अत्याचार करने से उन्हें क्या लाभ होगा? **प्रकृति यान्ति भूतानि, निग्रहः किं करिष्यति।** और यह सब इतना बेकार है! क्या तुम अनुभव करते हो कि तुम उसके बंधन में हो? क्या तुम छूटने के लिये लालायित हो? तुम्हारी बेड़ियों को खोलने की चाबी उसी के हाथ में है। क्या वह तुम्हारे और प्रभु के बीच खड़ी है? वह सीता है, उससे प्रार्थना करो।

वह एक ओर हो जायेगी और तुम्हें उनके दर्शन करा देगी। लेकिन सीता और राम को अलग करने की धृष्टता न करो। राम को अपने ही लिये अयोध्या में रखने के लिये उसे किसी सुदूर लंका में आत्मोत्पीड़न के राक्षसों की देखभाल में न फेंको। तुम चाहो तो काली से मल्लयुद्ध करो। वह अच्छे मल्ल पसंद करती है। लेकिन उसके साथ प्रेम के बिना या केवल जुगुप्सा और घृणा के साथ न लड़ो, क्योंकि उसकी नाराजगी भयंकर है। यद्यपि उसे असुरों से प्रेम है परन्तु वह उन्हें नष्ट कर देती है। बल्कि उसके द्वारा उसके संरक्षण में, उसकी उचित समझ के साथ, सच्चे और दृढ़ संकल्प के साथ चलो।

वह तुम्हें चाहे जितने चक्करों के साथ, फिर भी निश्चित रूप से, सबसे अधिक बुद्धिमत्ता के साथ सर्वानन्दमय व्यक्तित्व और अनिर्वचनीय उपस्थिति तक ले जायेगी। प्रकृति स्वयं भगवान् की शक्ति है, जो सत्ताओं की भीड़ को रात और रेगिस्तान, शत्रुओं की भूमि में से उनके गुप्त, प्रतिज्ञात दायरे की ओर ले जायेगी। योग में अतिप्रकृति हर तरह से हमारा लक्ष्य है। अभी तक जगत् के लिये प्राकृत होने के नाते आन्तरिक रूप से प्रकृति के परे जाना है, ताकि हम भीतरी और बाहरी दोनों तरीकों से उस पर स्वतंत्र और प्रभु के रूप में अधिकार कर सकें और स्वराट और सम्राट होकर उसका उपभोग कर सकें।

प्रतीकात्मक सत्ताओं के जगत् में प्रतीक होते हुए, उसके द्वारा प्रतीक को चरितार्थ करने के लिये, उस तक पहुँच सकें, जिसके हम प्रतीक हैं। अभी तक मानव रूप होते हुए, मनुष्यों में मनुष्य, जीवित शरीरों के बीच जीवित शरीर, अन्य सशरीर मानसिक सत्ताओं के बीच जीवित पदार्थ में निवास करनेवाली मानस सत्ता, अपने बाहरी भागों में रहते हुए, उसमें रहते हुए जो हम बाहरी रूप से हैं, फिर भी उससे परे जाना और शरीर में वह बनना जो हम वास्तव में अपने **गुप्त स्व** में हैं अर्थात् भगवान् या आत्मा, परम और **अनन्त सत्ता** बनना भागवत आनन्द का शुद्ध उल्लास, भागवत कर्म की शुद्ध शक्ति, भागवत ज्ञान का शुद्ध प्रकाश बनना ही हमारा लक्ष्य है।

हमारे सारे प्रतीयमान जीवन का केवल एक प्रतीकात्मक मूल्य है और वह संभवन के रूप में अच्छा और आवश्यक है लेकिन हर संभवन का लक्ष्य और परिपूर्ति है सत्ता, और भगवान् ही एकमात्र सत्ता हैं। **हम जिस पूर्णता के लिये बनाये गये थे, वह हैः जगत् की प्रकृति में और मानव प्रतीक में भागवत बनना।** ❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

आंतरिक शरीर का संरचनात्मक ज्ञान

मनुष्य के शरीर में छह चक्र

1. मूलाधार चक्रः- सुषुम्ना के अंतिम सिरे पर नीचे
2. स्वाधिष्ठान चक्रः- नाभि व मूलाधार के बीच में
3. मणिपुर चक्रः- नाभि में
4. अनाहत चक्र :- हृदय में
5. विशुद्ध चक्रः- कण्ठ में
6. आज्ञा चक्रः- ललाट में भौहों के बीच

तीन ग्रन्थियाँ

1. ब्रह्म ग्रन्थिः- नाभि में।
2. विष्णु ग्रन्थिः- हृदय में।
3. रुद्र ग्रन्थिः- कण्ठ में।

तीन बंध

1. मूलाधार बंधः- मूलाधार में लगता है। रीढ़ की हड्डी के अंतिम सिरे में।
2. उड्डियान बंधः- नाभि में लगता है।
3. जालन्धर बंधः- कण्ठ में लगता है।

मनुष्य शरीर में काम करने वाले पाँच प्रकार के वायु-

1. प्राण वायुः- प्राणवायु का काम श्वास भीतर ले जाना बाहर निकालना, भोजन पचाना, अन्न को मल में, पानी को मूत्र में और रसादि को वीर्य में परिणित करना। इसका स्थान हृदय में है।

2. अपान वायुः- अपान वायु गुदा से मल, उपस्थ से मूत्र और अण्डकोश से वीर्य बाहर निकालता है। इसका स्थान शरीर में नाभि से नीचे होता है।

3. समान वायुः- समान वायु जो समान रूप से शरीर में सब जगह काम करता है। वह खाए हुए अन्न रस को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाने का काम करता है। नाभि में इसका स्थान है।

4. उदान वायुः- उदान वायु द्वारा जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर से निकलकर लोकान्तर को जाता है। यहाँ प्राण या शक्ति के सुषुम्ना में होकर ऊपर की ओर चलती है और आत्मिक चेतना घटित करती है।

5. व्यान वायुः- जो व्यापक है। यह शक्ति शाखा प्रथम रूप से बहत्तर नाड़ियों की पूरी संख्या में से शरीर में व्याप्त होकर उसे क्रियाशील बनाता है। यह सारे शरीर में व्याप्त रहती है।

चार शरीर

1. स्थूल शरीरः- स्थूल शरीर में जाग्रतावस्था के सुख-दुःख का अनुभव करते हैं।

2. सूक्ष्म शरीरः- सूक्ष्म शरीर में स्वप्न देखते हैं। कण्ठ में सूक्ष्म शरीर का स्थान है।

3. कारण शरीरः- जो गहरी निद्रावस्था का शरीर है। इसका स्थान हृदय में है।

4. महाकारण शरीरः- जो परम चेतना या तुरियावस्था का शरीर है। इसका स्थान नाभि में है।

> अज्ञानी मनुष्य केवल मृत्यु की अलंघ्य दीवार को ही देखता है, जो उसके स्नेही मित्रों को सदा के लिए छिपाती हुई प्रतीत होती है। परन्तु एक अनासक्त व्यक्ति, जो दूसरों को ईश्वर की अभिव्यक्तियों के रूप में प्रेम करता है तो वह समझता है कि मृत्यु होने पर उसके प्रियजन थोड़ी देर के लिए, केवल विश्राम का आनंद लेने के लिए ईश्वर के पास वापस चले गए हैं।
>
> – स्वामी परमहंस योगानन्द

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

(२६) ढीले-ढाले मन से साधन में प्रवृत्त होने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि तब साधन के, कभी भी खण्डित हो जाने की संभावना होती है। एक कुशल वीर योद्धा की भाँति उत्साह किन्तु धैर्यपूर्वक आध्यात्मिक युद्ध में उतरने में ही श्रेय की कामना की जा सकती है।

यह आन्तरिक युद्ध कोई साधारण युद्ध नहीं है, अपितु कठिनतम अभियान है, जिसे ईश्वर पर अटूट विश्वास, समर्पण, निरन्तर साधन, धैर्य तथा सेवा के बल पर ही जीता जा सकता है।

(२७) अपने आन्तरिक शत्रुओं की शक्ति को कम मत आँको। आसुरी विद्याओं में निपुण ये शत्रु, जन्म-जन्मान्तर से आपको सदैव ही धोखा देने में सफल होते आए हैं। उनके पास प्रलोभन, भय, आकर्षण, भ्रान्ति आदि अनेक मायावी शस्त्र हैं। समय आने पर वे विवेक का भी अपने ढंग से शस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं। वे कहते कुछ तथा करते कुछ हैं।

वे कर्तव्य का स्वांग बना लेने में भी सिद्धहस्त हैं। ऐसे मायावियों से आपका सामना है, जो अदृश्य रहकर बाण चलाते हैं। इसलिए साधक को बड़े सावधान रहने की आवश्यकता है। 'गुरु कृपा' रूपी महाशस्त्र तो आपके पास है ही, किन्तु उसकी क्रियाओं में भ्रान्त हो जाने का भय है। यदि शक्तिशाली शस्त्र हाथ में हो तो भी समय आने पर उसका उचित प्रयोग होना भी आवश्यक है। समर्पण, सहनशीलता, उदारता, अक्रोध, क्षमाशीलता आदि शस्त्रों से सुसज्जित होकर उनका सामना किया जा सकता है। गीता के अनुसार असंग शस्त्र अर्थात् जगत् में रहकर जगत् से न्यारा रहना ही साधक का महान बल है। अन्तर में घटित होने वाली क्रियाओं को भी अपने से भिन्न देखते हुए, उनसे असंग रहना, अर्थात् उनसे प्रभावित नहीं हो जाना। क्रिया शक्ति, आन्तरिक शत्रुओं को अपने शस्त्र चलाने का अवसर प्रदान कर, उन्हें नष्ट कर देगी।

(२८) न ही शक्ति की क्रियाओं को ही कम करके आँको। शक्ति संस्कारों के आधार पर क्रियाशील होती है किन्तु उनसे सदैव ही अप्रभावित रहती है। क्रिया के रूप में साधक के पास ऐसा शस्त्र होता है, जो न काटा जा सकता है, न उसकी धार ही कभी कुन्द होती है तथा न ही उसे कभी जंग ही लगता है। क्रियारूपी शस्त्र कार्य तो सम्पन्न करने वाला है ही, प्रश्न केवल इतना है कि साधक उसका कहाँ तक प्रयोग करता, कितना प्रयोग करता है, कहाँ तक उसका आश्रय लेता है तथा साधनेतर समय में उसका क्या प्रयोग करता है ? यदि साधक-क्रियारूपी शस्त्र का समुचित प्रयोग करता है तो उसकी उन्नति की गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है। जिस प्रकार पतझड़ में पेड़ों के पत्ते गिरते चले जाते हैं, उसी प्रकार संस्कार भी एक के पश्चात् एक क्षीण होते चले जाते हैं।

(२९) कठिनाइयों, विघ्नों तथा समस्याओं से मत घबराओ। असफलताएँ आपको नई स्फूर्ति तथा शक्ति प्रदान करने के लिए प्रकट होती हैं। साधन करते-करते साधक में अभिमान जाग्रत हो जाने की संभावना है, यह विघ्न साधक को झकझोर कर जाग्रत करने के लिए उपस्थित होते हैं।

विघ्न आना स्वाभाविक भी है तथा आवश्यक भी, क्योंकि साधन में निखार, विघ्नों, कठिनाइयों तथा असफलताओं से ही आता है। जो इनसे घबरा कर साधन विमुख हो जाता है, वो कहीं का नहीं रहता। जो इनका सामना करता है तथा गिरने पर फिर उठ खड़ा हो जाता है, उसका अन्तर एक दिन साधन की सुगंध से महक उठता है ।

फिर एक बात और भी है, विघ्न या कठिनाइयों को समक्ष आना, है तो आन्तरिक शुद्धि का ही क्रम। साधक के संस्कार ही विघ्नों के रूप में प्रकट होते हैं। साधक को प्रसन्न होना चाहिए कि विपरीत-संस्कारों का विघ्नों के रूप में विलीनीकरण हो रहा है।

गंभीर साधक दुःखों, कष्टों, अपयश, कठिनाइयों को आमंत्रित करता है ताकि शीघ्रातिशीघ्र चित्त निर्मल हो जावे। जिनके समक्ष एक ही लक्ष्य होता है कि किसी प्रकार मन की निर्मलता सम्पादित हो कर, आत्म तत्त्व का अनुभव हो,

उनके सामने बाकी सब बातें गौण हो जाती हैं। दुःख आते हैं, निकल जाते हैं, किन्तु साधक की अन्तर्यात्रा अनवरत चलती ही रहती है।

कठिन चढ़ाई चढ़ते हुए तूफानों का सामना करते हुए, सर्दी-गर्मी की परवाह किए बिना ही वह आगे ही आगे बढ़ता जाता है ।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

संक्षेप में, उसे अपनी नयी समझ और बौद्धिक क्षमता के प्रकाश और सुविवेचित नियंत्रण की शक्ति को उन तक लाना पड़ा, जिससे पशु वंचित था। एक बार यह परिवर्तन या उलटाव सिद्ध हो जाये तो स्वयं अपने ऊपर और वस्तुओं पर क्रिया करने की, सृजन करने, जानने और चिन्तन करने की मानव मन की शक्ति उसके विकास क्रम में विकसित होगी और यद्यपि जैसी कि कल्पना की जा सकती है, आरंभ में ये चीजें अपने क्षेत्र में छोटी, पशु के निकट फिर भी अपनी क्रिया में अपेक्षाकृत सरल और अनगढ़ होंगी।

प्रकृति के हर आमूल संक्रमण में ऐसा उलटाव किया गया है। उभरती हुई प्राण-शक्ति जड़-पदार्थ पर मुड़ती है। जड़ ऊर्जा की क्रियाओं पर प्राणिक पदार्थ आरोपित करती है, और साथ ही अपनी नयी गतियों और क्रियाओं को विकसित करती है। जड़ और प्राण-शक्ति में प्राणिक मन उभरता है और अपनी चेतना का पदार्थ उनकी क्रियाओं पर आरोपित करता है, जब कि वह स्वयं अपनी क्रिया और क्षमताओं को विकसित करता है। एक नया आविर्भाव और उलटाव, मानव-जाति का आविर्भाव प्रकृति के पहले उदाहरणों के साथ संगत है। यह एक सामान्य नियम का नया प्रयोग होगा।

अतः इस परिकल्पना को स्वीकार करना आसान है और इसकी क्रिया समझ में आनेवाली है लेकिन दूसरी परिकल्पना काफी कठिनाइयाँ लाती है। चेतना की दिशा में नयी अभिव्यक्ति, मानव अभिव्यक्ति की व्याख्या वैश्व प्रकृति में अंतर्निष्ठ में से छिपी हुई चेतना का उमड़ना, कहकर की जा सकती है। लेकिन उस हालत में अपने आविर्भाव के वाहन के लिये पहले से मौजूद कोई जड़ रूप रहा होगा। आविर्भाव की शक्ति वाहन को अपने नये आंतरिक सृजन की आवश्यकताओं के अनुकूल बना लेती है या हो सकता है कि पिछले भौतिक प्ररूपों या नमूनों से तेजी के साथ अलग होने की वजह से कोई नयी सत्ता अस्तित्व में आयी हो। लेकिन चाहे जिस परिकल्पना को माना जाये, उसका अर्थ होता है **विकास-प्रक्रिया**-केवल भिन्नता या संक्रमण के तरीके और यंत्र-विन्यास में फर्क होता है। या, इसके विपरीत, हो सकता है कि उमड़ने की जगह हमारे ऊपर के मानसिक लोक से पार्थिव प्रकृति में मानसिकता का अवतरण या शायद एक अंतरात्मा का या मनोमय सत्ता का अवतरण हुआ हो।

तब कठिनाई होगी मानव शरीर के प्रकट होने के बारे में क्योंकि यह शरीर इतना जटिल और कठिन साधन है कि यह अचानक सृष्ट या अभिव्यक्त नहीं हो सकता। क्योंकि प्रक्रिया की ऐसी चमत्कारिक तेजी यद्यपि सत्ता के अतिभौतिक स्तर पर बिलकुल संभव है, फिर भी जड़ ऊर्जा की साधारण संभावनाओं या संभाव्यताओं में प्रकट होती हुई नहीं दिखलायी देती। यह केवल किसी अतिभौतिक शक्ति या प्राकृतिक विधान के हस्तक्षेप या सीधे जड़ पर पूरी शक्ति के साथ कार्य करते हुए **सर्जक मन** के द्वारा हो सकता है। जड़ के अंदर हर नये आविर्भाव के लिये अतिभौतिक शक्ति और सर्जक की क्रिया को माना जा सकता है। ऐसा हर आविर्भाव अपनी तह में एक चमत्कार है, जिसका संचालन अवगुंठित मानसिक ऊर्जा या प्राण-ऊर्जा द्वारा समर्थित गुप्त चेतना द्वारा होता है।

लेकिन कहीं भी क्रिया सीधी, प्रत्यक्ष और आत्मनिर्भर नहीं मालूम होती। वह हमेशा किसी पहले से ही चरितार्थ किये गये भौतिक आधार पर ऊपर से आरोपित की जाती है और प्रकृति की किसी प्रतिष्ठित प्रक्रिया के फैलाव से काम करती है। यह अधिक **धारणागम्य** है कि किसी वर्तमान शरीर में अतिभौतिक अंतरागमन के लिये कोई उद्घाटन था और उससे वह एक नये शरीर में रूपांतरित हो गया। लेकिन हम यूं ही हल्के-फुल्के रूप में, यह नहीं मान सकते कि जड़ प्रकृति के विगत इतिहास में ऐसी कोई घटना घटी हो।

ऐसा लगता है कि इसके लिये, ऐसा शरीर बनाने के लिये जिसमें वह निवास करना चाहता है, किसी अदृश्य मनोमय सत्ता के सचेतन हस्तक्षेप की जरूरत पड़ती हो। या फिर स्वयं जड़ में मनोमय सत्ता का कोई **पूर्ववर्ती विकास** रहा हो जो अतिभौतिक शक्ति के ग्रहण करने में और उसे अपने भौतिक अस्तित्व के कठोर संकीर्ण तत्त्वों पर आरोपित करने में पहले से ही सक्षम हो। अन्यथा हमें यह मानना होगा कि एक पूर्ववर्ती शरीर पहले से ही इतना विकसित था कि एक बड़े मानसिक अंतर्वाह को ग्रहण करने में सक्षम था या अपने अंदर मनोमय सत्ता के अवरोहण को **नमनशील** उत्तर देने में समर्थ था।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन"

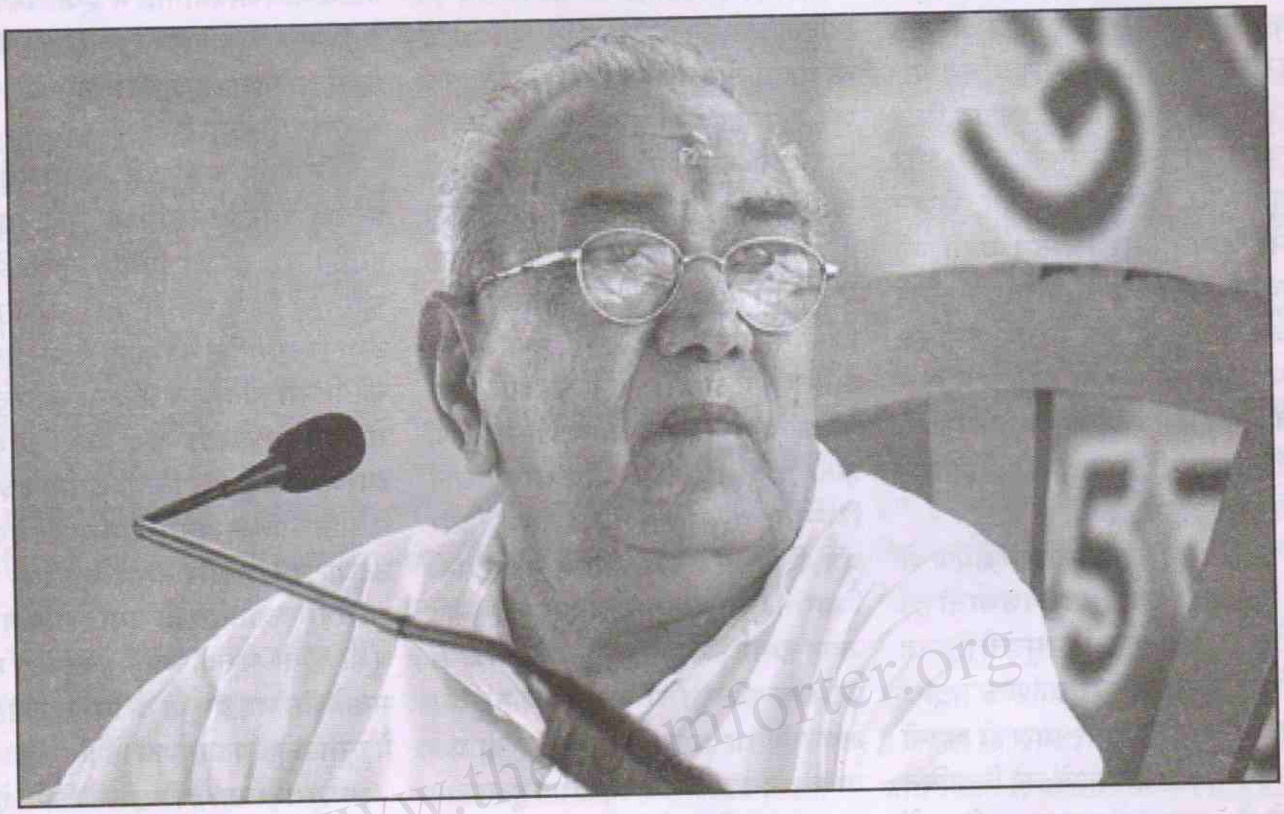

"लोग जिस कार्य को कई जन्मों में होना असंभव बताते हैं, "गुरु कृपा" से वह परिवर्तन क्षणभर में हो जाता है। मैंने इस प्रकार के परिवर्तन प्रत्यक्ष होते देखे हैं।

मुझे परमसत्ता ने स्पष्ट बताया है कि जिस प्रकार चावल की हांडी में से एक चावल का दाना लेकर देखने से सभी चावलों के पकने का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार सभी समर्पित लोगों के अंगीकार और न्याय की प्रार्थना का, एक जैसा प्रभाव होता है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

यदि हम अधिक गौर से देखें तो मनुष्य सर्वथा अकेला नहीं है, वह सर्वथा पृथक् रहनेवाला स्वतः स्थित व्यक्ति नहीं है, बल्कि किसी मन विशेष और शरीर विशेष में स्वयं मानव-जाति है; और स्वयं मानव-जाति भी स्वतः स्थित सबसे पृथक् जाति नहीं है, बल्कि भूमा विश्वपति ही मानवजाति के रूप में मूर्तिमान हैं; इस रूप में वे कतिपय संभावनाओं को क्रियान्वित करते हैं, आधुनिक भाषा में कहें तो अपनी अभिव्यक्ति की शक्तियों को प्रस्फुटित और विकसित करते हैं, पर जो कुछ विकसित होकर आता है, वह स्वयं अनंत होता है, स्वयं आत्मा होता है।

आत्मा से हमारा अभिप्राय है, उस स्वयंभू सत्ता से जिसमें चेतना की अनन्त शक्ति और अपार आनन्द निहित हैं; आत्मा यही है और यदि यह न हो तो कुछ भी नहीं है अथवा कम-से-कम मनुष्य और जगत् के साथ उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है और इसलिए मनुष्य और जगत् का उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। स्थूल द्रव्य, शरीर तो सचेतन सत्ता की शक्ति का ही पूँजीभूत कर्म है, चेतना की इन्द्रियशक्ति द्वारा क्रियान्वित होनेवाले चेतना के परिवर्तनशील सम्बन्धों को काम में लाने के लिए साधन के तौर पर, यह उपयोग में लाया जाता है।

यथार्थ में स्थूल द्रव्य कहीं भी चेतना से खाली नहीं है; क्योंकि एक-एक अणु-रेणु और छिद्ररंध्र में भी कोई संकल्पशक्ति, कोई बुद्धि कार्य कर रही है, यह बात अब आधुनिक सायंस को भी मजबूरन स्वीकार करनी पड़ी है। परन्तु यह संकल्प शक्तियाँ, बुद्धि उस आत्मा या ईश्वर की है, जो इसके अन्दर विद्यमान है।

यह किसी जड़ छिद्र या अणु का अपना, अपने से ही उपजा हुआ पृथक् संकल्प या विचार नहीं है। स्थूल में अंतर्लीन विराट् संकल्प और बुद्धि कार्य के बाद एक रूपों में से होकर अपनी शक्तियों का विकास करते रहते हैं और अंत में पृथ्वी पर मनुष्य के अन्दर पहुँचकर पूर्ण भागवत शक्ति के ज्यादा से ज्यादा पास पहुँच जाते हैं और यहीं इनको, इनकी बहिर्गत और रूपगत बुद्धि में भी, पहले-पहल अपनी दिव्यता का कुछ-कुछ धुंधला सा आभास मिलता है। परन्तु यहाँ भी एक सीमा होती है, यह प्राकट्य भी अभी अपूर्ण है और इसलिए निम्नतर रूपों को भगवान् के साथ अपने तादात्म्य का ज्ञान नहीं हो पाता।

क्योंकि प्रत्येक ससीम प्राणी में बाह्य जगत् की क्रिया की एक सीमा बँधी होती है और उसके साथ-साथ उसकी बाह्य चेतना की भी एक सीमा लगी रहती है, जो जीव के स्वभाव का निरूपण करती और एक-एक जीव के अन्दर आन्तरिक भेद उत्पन्न कर देती है। अवश्य ही भगवान् इस सबके पीछे रहकर कर्म करते हैं और इस बाह्य अपूर्ण चेतना और संकल्प के द्वारा अपनी विशेष अभिव्यक्तियों का नियमन करते हैं, किन्तु, जैसा कि वेद में कहा गया है, वे अपने-आपको गुहा में छिपाये रहते हैं।

गीता इसी बात को यों कहती है कि ''ईश्वर सब प्राणियों के हृद्देश में वास करते हैं और सबको माया से यंत्रारूढ़वत् चलाते रहते हैं। हृद्देश में छिपे हुए भगवान्, अहमात्मक प्राकृत चेतना के द्वारा जिस प्रकार कर्म करते हैं, वही जगत् के प्राणियों के साथ ईश्वर की कार्यप्रणाली है। जब ऐसा ही है, तब हमें यह मानने की क्या आवश्यकता है कि, वे किसी रूप में, यानी प्राकृत चेतना में भी सामने आकर प्रकट होते और प्रत्यक्ष में अपने विरुद्ध चैतन्य के साथ कार्य करते हैं? इसका उत्तर यही है कि यदि भगवान् इस तरह आते हैं तो मनुष्य और अपने बीच के परदे को फाड़ने के लिए आते है, जिस परदे को अपनी प्रकृति में सीमित मनुष्य उठा तक नहीं सकता।

गीता कहती है कि जीव साधारणतया जो अपूर्ण रूप से कर्म करता है, उसका कारण यह है कि वह प्रकृति की यांत्रिक क्रिया के वश में होता है और माया के रूपों से बंधा रहता है। प्रकृति और माया भागवत चैतन्य की कार्यशक्ति के ही दो परस्पर-पूरक पहलू हैं। माया यथार्थ में भ्रम नहीं है-भ्रम का भाव या आभास केवल अपरा प्रकृति के अज्ञान से अर्थात् त्रिगुणात्मिका माया से उत्पन्न होता है।

भागवत चैतन्य में सत्ता की विविध आत्माभिव्यक्तियों को करने की शक्ति को माया कहते हैं, और प्रकृति उसी चैतन्य की वह कार्यशक्ति है, जो भगवान् के प्रत्येक अभिव्यक्त रूप का उसके स्वभाव और स्वधर्म के अनुसार, उसके गुणकर्म के अनुसार जगत्-अभिनय में परिचालन करती है।

क्रमशः अगले अंक में...

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित 'गीता प्रबंध' पुस्तक से

www.the-comforter.org

प्रार्थना

हे मेरे प्रभु ! तेरा मधुर आनंद, मेरे हृदय को भरता है; तेरी नीरव शांति, मेरे मन पर राज्य करती है। सब कुछ विश्रांति, शक्ति, एकाग्रता, प्रकाश और प्रशांतता है; और यह सब असीम है, इसमें कोई विभाजन नहीं है। क्या केवल पृथ्वी या समस्त विश्व का निवास है मेरे अंदर-मैं नहीं जानती, लेकिन हे प्रभो ! यह तू ही है जो इस चेतना में निवास करता है और उसे जीवन प्रदान करता है। यह तू ही है जो देखता, जानता और कार्य करता है। केवल तुझे ही मैं सब जगह देखती हूँ, या यूं कहें कि अब कोई और 'अहं' नहीं बचा, सब कुछ एक है और यह एकत्व है "तू"।

हे प्रभो ! तेरी जय हो, हे जगत् के स्वामी, तू ही सभी चीजों में चमक-दमक रहा है। सदा तेरी ही इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा ही मेरी इच्छा हो। जो तू चाहता है, वो ही हो।

'प्रार्थना और ध्यान' पुस्तक, पृष्ठ-83

गतांक से आगे...

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

"Not many days hence" का प्रयोग किया है जिसका स्पष्ट अर्थ होता है "एक दिन से अधिक नहीं"। अतः इस भविष्यवाणी का सही समय मालूम करने के लिए हमें ईश्वरीय समय से हिसाब लगाना पड़ेगा। क्योंकि उपरोक्त भविष्यवाणी यीशु ने मृत्यु के बाद "आत्म" भाव से की है, अतः उस सहायक के प्रकट होने का समय जानने के लिए हमें ईश्वरीय समय का ही सहारा लेना होगा। जो इस प्रकार है- 2 पीटर 3:8 "हे प्रियो! यह एक बात तुमसे छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।"

इस प्रकार एक हजार वर्ष पूर्ण होने के साथ ही ईश्वर का एक दिन पूर्ण हो चुका है। सन् दो हजार के पूर्ण होने के साथ ही ईश्वर के दो दिन पूर्ण होकर तीसरा दिन प्रारम्भ हो जावेगा। इस प्रकार उस सहायक को 20वीं सदी के अन्त से पहले-पहले प्रकट होना पड़ेगा।

उस सहायक को पहिचानने के लिये यीशु और यहोवा ने एक ही पहिचान दी है, जो व्यक्ति उस कसौटी पर खरा उतरेगा, ईसाई जगत उसे ही सहायक के रूप में स्वीकार करेगा। वह कसौटी है "अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को दिखाना-सुनाना"। इस प्रकार जो व्यक्ति अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को दिखा-सुना देगा, ईसाई उसी को सहायक के रूप में स्वीकार करेंगे।

इस सम्बन्ध में यीशु ने जॉहन 16:13,14 में कहा है- "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आवेगा, तो तुम्हें पूर्ण सत्य का मार्ग दिखावेगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें दिखाएगा।"

16:14- "वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें दिखाएगा।"

(1) आने वाली बातें दिखाने का अर्थ हुआ, भविष्य को दिखाना,
(2) मेरी बातों में से लेकर दिखाने का अर्थ हुआ, भूतकाल को दिखाना।

क्रमशः अगले अंक में...

अवस्थाएँ मात्र हैं।

दर्शन और धर्म भगवान् के अलग-अलग पहलुओं की प्राथमिकता के बारे में विवाद करते हैं। योगियों, ऋषियों और सन्तों ने इस या उस दर्शन या धर्म को ज्यादा पसंद किया है। हमारा काम उनमें से किसी के बारे में झगड़ना नहीं, बल्कि उन सबको चरितार्थ करना और सब बन जाना है, बाकी सबको फेंककर किसी एक रूप का अनुसरण करना नहीं बल्कि भगवान् को उनके सभी रूपों में, और रूपों के परे आलिंगन करना है।

भगवान् ने बहुत से रूपों में इस धरती पर उतरकर मानसिक और शारीरिक रूपों को पूर्णता दी है, उसी को हम **'मानव जाति'** कहते हैं।

वे जगत् में सबके ऊपर शासन करने वाली अन्तरात्मा के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, जिसके साथ अपनी रचनात्मक-इच्छा या शक्ति अस्तित्व की लय के साथ रहती है, जिसमें **भौतिक तत्त्व** सबसे नीचा और शुद्ध **सत्** सबसे ऊँचा पद है। मन और प्राण भौतिक तत्त्व पर (मन और प्राण अन्न पर) स्थित होते हैं और इनसे जगत्-सत्ता का निचला आधा भाग (अपरार्ध) बनता है। शुद्ध चेतना और शुद्ध सत्ता में से निकलते हैं (परार्द्ध)। शुद्ध विचार (विज्ञान) इन दोनों के बीच कड़ी के रूप में स्थित है। सत्ता के यह सात तत्त्व या पद ही पुराणों के सप्त जगत् के आधार हैं (सत्यलोक, तपस, जन, महर, स्वर, भुवर और भुर)।

चेतना की इस व्यवस्था में निचला गोलार्द्ध तीन वैदिक व्याहृतियों से बना है:

भुर, भुवर, स्वर। ये चेतना की अवस्थाएँ हैं, जिनमें उच्चतर जगत् के तत्त्व प्रकट होते हैं या अपने-आपको विभिन्न स्थितियों में प्रकट करने की कोशिश करते हैं। वे अपने, निजधाम में शुद्ध होते हैं, लेकिन इस पराये देश में विकृत, अशुद्ध और गड़बड़ करने वाले संयोजनों और क्रियाओं के अधीन हो जाते हैं। जीवन का अन्तिम लक्ष्य है विकृति, अशुद्धि और गड़बड़ों से छुटकारा पाना और उन्हें पूरी तरह से इन दूसरी स्थितियों में प्रकट करना । इस धरती पर हमारा जीवन एक दिव्य कविता है, जिसे हम पार्थिव भाषा में अनूदित कर रहे हैं, या संगीत की एक धुन है, जिसमें हम शब्द बिठा रहे हैं।

> **अतः जब हम संसार में लीन होते हैं तो भगवान् को अंदर खो देते है और जब भगवान् को देखते हैं तो हम उन्हें जगत् के अंदर खो देते हैं। हमारा काम है इस मानसिक अहंकार को तोड़कर विलीन कर देना और विश्व में अपनी व्यक्तिगत और बहुल सत्ता की शक्ति को खोये बिना, अपने दिव्य ऐक्य में लौट जाना।**

सत् में सत्ता, बहु में एक है, ऐसा एक जो अपनी बहुलता में खोये या परेशान हुए बिना उसे देखता है, ऐसी बहुलता जो विश्व में बहु के खेल की शक्ति खोये बिना अपने-आपको एक जानती है। मन, प्राण और शरीर की परिस्थितियों में अहंकार उत्पन्न होता है और मिथ्या रूप में चेतना के आत्मनिष्ठ या वस्तुनिष्ठ रूप को स्वयंभू सत्ता, शरीर को स्वतंत्र व्यक्तित्व वास्तविकता और अहं को स्वतंत्र व्यक्तित्व मान लिया जाता है। एक अपने-आपको पा लेता है तो मन के स्वभाव के कारण उसे बहु की लीला जारी रखना कठिन लगता है।

अतः जब हम संसार में लीन होते हैं तो भगवान् को अंदर खो देते है और जब भगवान् को देखते हैं तो हम उन्हें जगत् के अंदर खो देते हैं। हमारा काम है इस मानसिक अहंकार को तोड़कर विलीन कर देना और विश्व में अपनी व्यक्तिगत और बहुल सत्ता की शक्ति को खोये बिना, अपने दिव्य ऐक्य में लौट जाना।

चित् में चेतना स्वतंत्र, प्रकाशमान, असीम और प्रभावकारी होती है, जिसके बारे में वह चित् रूप में अभिज्ञ है (ज्ञान शक्ति) उसे वह अमोघ तपस् के रूप में (क्रिया शक्ति) सम्पन्न करती है। क्योंकि ज्ञान शक्ति केवल स्थायी और व्यापक है, क्रिया शक्ति केवल स्वयं प्रकाशमान सचेतन सत्ता का गतिशील और तीव्र रूप है। वे भगवान् की चित् शक्ति की एक शक्ति है (सत् पुरूष की चिच्छक्ति हैं) लेकिन निम्नार्द्ध में, मन, प्राण और शरीर की अवस्थाओं में प्रकाश विभक्त हो जाता है और असमान किरणों में बंट जाता है, स्वाधीनता अहंकार की बेड़ियों में पड़कर असमान रूपों में फंस जाती है और असमान शक्तियों का खेल उनकी सामर्थ्य पर परदा डाल देता हैं, इसलिये हमारे अंदर चेतना, निश्चेतना और मिथ्या चेतना, ज्ञान, अज्ञान और

मिथ्या ज्ञान, समर्थ शक्ति, जड़ता और असमर्थ शक्ति की अवस्थाएँ होती हैं।

हमारा काम है, अपनी विभक्त और असमान वैयक्तिक कार्य और विचार शक्ति को त्याग कर काली की एक अविभक्त वैश्व चित् शक्ति को अपने अहंकारपूर्ण क्रियाकलाप के स्थान पर अपने शरीर में वैश्व काली-लीला को स्थान दें और **इस प्रकार अंधता और अज्ञान के बढ़ते हुए ज्ञान और प्रभावशून्य मानव बल की जगह भगवान् की समर्थ शक्ति को ले आयें।**

आनन्द मे उल्लास शुद्ध, अमिश्रित, एक और फिर भी बहुसंख्यक होता हैं। मन, प्राण और शरीर की अवस्थाओं के अधीन वह विभक्त, सीमित, अस्तव्यस्त और दिग्भ्रान्त हो जाता है और असमान शक्तियों के धक्कों और आनन्द के असमान वितरण के कारण सकारात्मक और नकारात्मक गतियों, दुःख-सुख, हर्ष और पीड़ा के द्वितों के कारणों को भंग करके उन्हें विलीन कर देना। अपने-आप भागवत आनन्द के सागर में डुबकी लगाना, जो एक और बहु सम है, जो सभी चीजों में आनन्द लेता है और किसी से दुःख-दर्द के साथ पीछे नहीं हटता।

संक्षेप में, हमें द्वित्तों के स्थान पर ऐक्य, अहंकार के स्थान पर भागवत चेतना, अज्ञान की जगह भागवत प्रज्ञा, विचार की जगह भागवत ज्ञान, दुर्बलता, संघर्ष और प्रयास की जगह आत्म तुष्ट भागवत शक्ति, पीड़ा और मिथ्या सुख की जगह भागवत आनन्द को लाना होगा। **ईसा की भाषा में इसे कहते हैं स्वर्ग के राज्य को धरती पर लाना या आधुनिक भाषा में कहें तो भगवान् को जगत् में चरितार्थ और कार्यान्वित करना।**

धरती पर मानव जाति, जीवन का वह रूप है जिसे इस मानव अभीप्सा और भागवत उपलब्धि के लिये चुना गया है। जीवन के अन्य सभी रूपों को या तो इसकी जरूरत नहीं है या वे इसके लिये तब तक अक्षम है, जब तक कि वे मानवता में न बदल जायें। **मानव जाति का एक मात्र वास्तविक उद्देश्य है, भागवत परिपूर्णता।** जाति में इसके चरितार्थ होने से पहले उसे व्यक्ति के अंदर चरितार्थ करना होगा।

मानव जाति सजीव शरीर में मानसिक सत्ता है। उसका आधार है भौतिक तत्त्व, उसका केन्द्र और यंत्र है मन और उसका माध्यम है जीवन या प्राण। औसत या स्वाभाविक मानव जाति की यही अवस्था है।

हर मनुष्य में चार उच्चतर तत्त्व अव्यक्त हैं -- महस, विज्ञान में शुद्ध आदर्श-रूपता नहीं, व्याहृति नहीं बल्कि व्याहृतियों का स्त्रोत है, वह बैंक है जिस पर मन, प्राण और शरीर के क्रिया-कलाप निर्भर होते हैं और उसकी अपार सम्पत्ति को निचले जीवन के छोटे सिक्कों में बदल लेते हैं। विज्ञान भागवत अवस्था और मानव पशु के बीच की कड़ी होने के नाते वह पलायन द्वार है जिसमें से होकर मनुष्य अति प्राकृतिक या दिव्य मानवता में जा सकता है।

निम्नतर मानव जाति मन से प्राण और शरीर की ओर खिंचती है। औसत मानव जाति सदा मन में निवास करती है, जो प्राण और शरीर की ओर दृष्टि लगाये रहता और उनसे सीमित रहता है। उच्चतर मानव-जाति या तो आदर्श मानसिकता या शुद्ध भाव, ज्ञान के प्रत्यक्ष सत्य और सत्ता के सहज सत्य की ओर उठती है । श्रेष्ठ मानव जाति दिव्य आनन्द की ओर उठती है और उस स्तर से या तो ऊपर शुद्ध सत् और परब्रह्म की ओर उठती है या अपने निम्नतर अंगों को आनन्द देने के लिये इस मानव जाति को अपने और दूसरों के अंदर दिव्यता तक उठाने के लिये बनी रहती है।

जो मनुष्य पर्दा साफ करके अपनी चेतना के उच्चतर या दिव्य परन्तु वर्तमान में प्रच्छन्न गोलार्द्ध में निवास करता है, वही सच्चा अतिमानव और अन्तिम उत्पादन है -जिसे अब क्रमिक विकास तत्त्व कहते हैं।

भागवत जीवन, शक्ति, प्रकाश और आनन्द में उठना और उस सांचे में सांसारिक जीवन को ढ़ालना धर्म की परम अभीप्सा और योग का पूर्ण व्यावहारिक लक्ष्य है। लक्ष्य है भगवान् को विश्व में चरितार्थ करना, लेकिन यह विश्व के परात्पर भगवान् को चरितार्थ किये बिना नहीं हो सकता।''

अपनी आराधना के उच्च स्तर पर हर योगी तपस्वी और महर्षि ने यही संदेश दिया कि आराधना काल में साधक के अंदर आने वाले असंख्य विचारों व द्वंद्वों को कोई स्थायी स्थान न दें। केवल सद्गुरुदेव द्वारा बताए पथ को ही प्रथम और अंतिम सत्य मानना चाहिए। बिना किसी कठिन पथ को अपनाए, सहज रूप में गुरुदेव द्वारा बताए नाम का जप व ध्यान करते रहें।

-सम्पादक

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

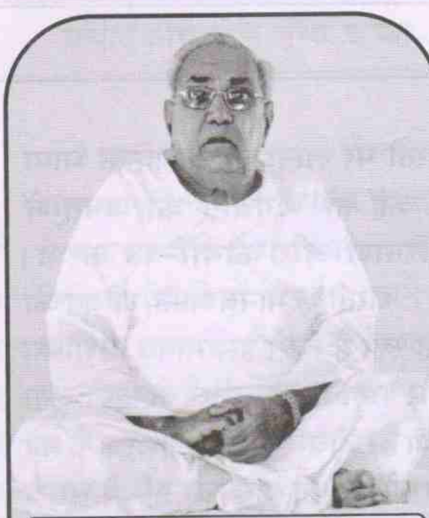

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker ***'Mantra'*** *chanting and* ***'Meditation'***.

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में ध्यान मग्न साधक

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में ध्यान मग्न साधक

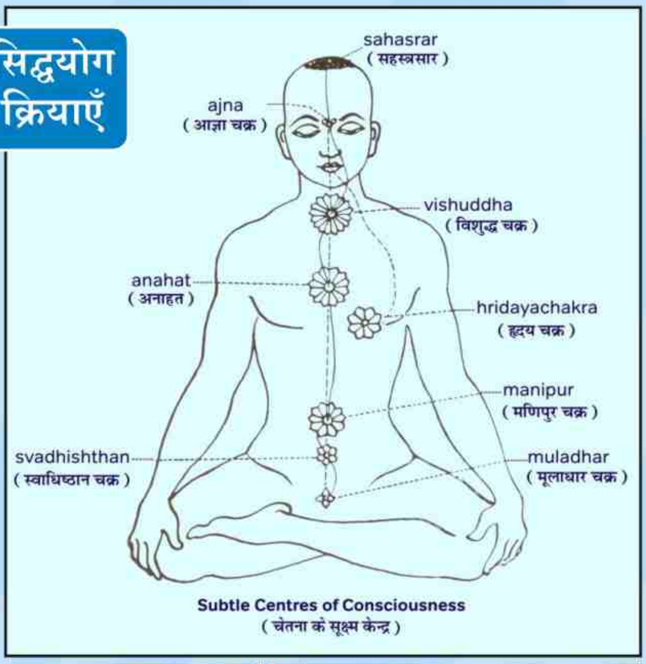

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् ______________________

____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी